ॐ

श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 जनवरी 2004 वार्षिक शुल्क : रू. 50 (भारतवर्ष में) वार्षिक शुल्क : रू 350 (विदेश में) वर्ष 24 अंक 3

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश











आयोजन आमंत्रण



नवीन प्रेम प्रकाश आश्रमों का उद्‌घाटन महोत्सव व मूर्ति स्थापना समारोह

पूज्यपाद सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पावन कर कमलों द्वारा सम्पन्न होगा, इस अवसर पर प्रेम प्रकाश मंडल के सभी संत-महापुरूष आकर सत्संग ज्ञान की अमृत वर्खा करेगें। आप सभी इस शुभ-अवसर पर सम्मलित होकर अपने जीवन को सफल बनावें।

कार्यक्रम

गोन्दिया

25 जनवरी से 29 जनवरी 2004 तक

सत्संग प्रतिदिन प्रात: 8 से 10 व सायं 5 से 7 बजे तक

27 जनवरी को हवन की पूर्णाहुति, मूर्ति अनावरण-दर्शन

29 जनवरी को ध्वजावंदन, पाठों के भोग, व आम भण्डारा.

सामूहिक यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा.

आयोजन स्थल: स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
स्वामी टेऊँराम जनकल्याण परिषद
स्वामी टेऊँराम मार्ग, सिंधी कॉलोनी,
गोन्दिया-441601, दूरभाष: 226924

बालाघाट

29 जनवरी से 2 फरवरी 2004 तक

सत्संग प्रतिदिन प्रात: 8 से 10 व सायं 5 से 7 बजे तक

31 जनवरी को हवन की पूर्णाहुति, मूर्ति अनावरण-दर्शन

2 फरवरी को ध्वजावंदन, पाठों के भोग, व आम भण्डारा.

आयोजन स्थल: स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
वार्ड नं. 13 सिंधी कॉलोनी,
बालाघाट-481001
दूरभाष: 242763

सिवनी

1 से 5 फरवरी 2004 तक

प्रतिदिन सत्संग

प्रात: 8 से 10 व सायं 5 से 7 बजे तक.

3 फरवरी प्रात: 10 बजे

हवन की पूर्णाहुति, मूर्ति अनावरण-दर्शन

5 फरवरी प्रात: 8 से 12 बजे तक

ध्वजावंदन, पाठों के भोग, व आम भण्डारा.

आयोजन स्थल:
स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
सिंधी कॉलोनी, सिवनी-480661
दूरभाष: 224752

डबरा

18 से 22 फरवरी 2004 तक

प्रतिदिन सत्संग

प्रात: 8 से 10 व सायं 5 से 7 बजे तक.

20 फरवरी प्रात: 10 बजे

हवन की पूर्णाहुति, मूर्ति अनावरण-दर्शन

22 फरवरी प्रात: 8 से 12 बजे तक

ध्वजावंदन, पाठों के भोग, व आम भण्डारा.

आयोजन स्थल:
स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
ढीमरपुरा, डबरा (म.प्र.)
दूरभाष: 223245

मुरैना

22 से 26 फरवरी 2004 तक

प्रतिदिन सत्संग

प्रात: 7:30 से 9:30 व सायं 4 से 7 बजे तक.

24 फरवरी प्रात: 10 बजे

हवन की पूर्णाहुति, मूर्ति अनावरण-दर्शन

26 फरवरी प्रात: 8 से 12 बजे तक

ध्वजावंदन, पाठों के भोग, व आम भण्डारा.

आयोजन स्थल:
स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
सिंधी कॉलोनी, मुरैना-476001
दूरभाष: 230280

ॐ

श्री सत्‌नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एक मात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

वर्ष 24

प्रेम प्रकाश संदेश

अंक 3

❖ मंगल आशीष ❖

आचार्य सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सदगुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज
सदगुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज

❖ संस्थापक ❖

सदगुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज

❖ संरक्षण, मार्गदर्शन ❖

सदगुरू स्वामी शांति प्रकाशजी महाराज

❖ सदस्यता शुल्क ❖

भारत में
एक वर्ष के लिए 50 रूपए
तीन वर्ष के लिए 140 रूपए
विदेश में
एक वर्ष के लिए 350 रूपए
तीन वर्ष के लिए 1000 रूपए

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन श्री सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें शीघ्र ही मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए।

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :–
व्यवस्थापक प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम,
ढाढवे की गोठ, लश्कर ग्वालियर – 474001
फोन नं.– 0751–2454183, 2327427

। अनुक्रम ।

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति शनिवार व रविवार प्रात: 8 से 12 बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए शुल्क जमा किया जा सकता है

कथा चूड़ाला शिखरध्वज-30

आत्म ज्ञान

ज्ञानी का जगत दर्शन

ये जगत मैं और तू पर टिका हुआ है. अगर मैं और तू जगत से निकाल दिया जाए तो जगत की सत्ता ही नहीं रहती. व्यवहार में से भी अगर मैं और तू निकाल दिया जाए तो जो दौड़-धूप है सब समाप्त हो जाए. आदमी अपनी मैं को तुष्ट करने के लिए, अर्थात् ये दिखाने के लिए कि मैं कुछ हूँ , सारा व्यवहार करता है अर्थात् अगर मैं और तू छूट जाए तो व्यर्थ के क्रियाकलापों से आदमी छूट सकता है.

मैं और तू जब तक है तब तक जगत है. मैं और तू गया तो फिर बस आत्म तत्व ही है. रानी चूड़ाला के मन में भी ये विचार चल रहे हैं कि ''मैं तू ते मैं रहित हूँ ,मुझमें फुरना नाहिं'' जो मैं अपने आप को समझ रही हूँ वो मैं नहीं हूँ जो अन्य को तू समझ रही है वो मैं नहीं हूँ जो अन्य को तू समझ रही है वो तू-तू नहीं है. तू भी मैं ही है और में भी तू ही है. अलग नहीं है, एक ही है. स्थूल दृष्टि से भले ही अलग -अलग प्रतीत होता है परन्तु तत्व पर पहुँचते ही दोनों विलीन हो जाते हैं. इतना कथा का प्रसंग होके आया है. आज के प्रसंग में याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं-हे भारद्वाज!मुनि वशिष्ठ कहते हैं-हे राम जी! सत्गुरू महाराज जी कहते हैं - हे जिज्ञासुओं मुमुक्षुओं !

रानी विचार करती है. 'शांतरूप चित् में रहूँ अपने आत्म माहिं' जब आत्मपद में आदमी की स्थिति हो जाती है तब सारे संकल्प-विकल्प दूर हो जाते हैं और संकल्प-विकल्प छूटते ही व्यक्ति शांति को प्राप्त कर लेता है. रानी बता रही है कि ''कैसे हूं मैं'' ''सो ही आत्म है अद्वैता''अद्वैत है आत्मतत्व !

अद्वैतता में अनेकता

अद्वैत माने जहाँ दो नहीं है. जब एक कहा जाता है तो दो उसके अंदर understood हो जाता है. अपने आप उसके साथ जुड़ा हुआ है दो. इसीलिए बड़ा सुंदर शब्द महापुरूषों ने खोजा है कहा-अद्वैत. जहाँ द्वैत न हो जहाँ दो न हो और जहाँ दो नहीं, वहाँ शांति है, वहाँ आनन्द है.

आत्मा अद्वैत है अर्थात् उसके सामने कोई दूसरा नहीं है. जैसे कहते हैं-अद्वितीय है. ऐसे ही वो अद्वैत शब्द है और ''कब परिणाम न पाते हैं'' कभी उसमें विकार उत्पन्न नहीं होता. कभी उसके अंदर फर्क नहीं आता परिणाम नहीं होता, कोई फल नहीं मिलता उसका. परन्तु ये जो निर्गुण निराकार है वही सगुण साकार हो जाता है. 'बहुत रूप को धार रहा यह ज्ञानी संत सुनाते हैं' बहुत रूपों को धारण कर रहा है ये. आगे दृष्टांत देते हुए बताते हैं 'किस प्रकार कर रहा है' यह बालक होते हैं न. मिट्टी लेते हैं, गीला करते हैं उस मिट्टी से फिर उसमें से हाथी बनाते हैं, गुड़िया बनाते हैं और कई चीजें बनाते हैं, तरह-तरह के मिट्टी के खिलौने बनते हैं. कोई पक्षी बना है, कोई पशु बना हुआ है, कोई आदमी बना है, कोई औरत बनी हुई है. कोई कैसा बना हुआ है, कोई कैसा बना हुआ है. बालक इन तरह-तरह की आकृतियों को देखकर बड़े प्रसन्न होते हैं और हम जो बड़े लोग हैं क्या लगता है ये मिट्टी है, अभी नहीं तो थोड़ी देर में टूट जाएगी और रेत के घर बनाते हैं. न कितना झगड़ा करते है बालक. ये मेरा घर है, ये मेरा घर है. रेत में पैर देकर घर बनाते हैं और घर बनाकर फिर आपस में विवाद करते हैं कि मैंने पाँच घर बनाये हैं, तुमने चार घर बनाये हैं. मैं जीत गया आप हार गये क्यों? क्योंकि उस समय उस बालक की ये पक्की धारणा होती है कि ये घर मैंने ही बनाया है.

असत् संसार में सत् बुद्धि

और ऐसी ही धारणा हम भी घर बनाकर करते हैं कि ये मेरा घर है, मेरा दुकान है. मैने इतने घर बनाये हैं, मैंने इतनी सम्पति इकट्ठी की है, मेरे पास बहुत धन है, मैं दुनिया का सबसे अमीर आदमी हूँ. जैसे वे बालक रेत के घर, मिट्टी के खिलौने बनाकर उन पर अपना अधिकार जमाते हैं कि ये हमारी है जबकि ये हमेशा किसी की रहती नहीं हैं.

बालक भी घर बनाकर, खिलौने इकट्ठे करके प्रसन्न होते हैं कि ये सब हमारा है. हम भी ऐसे ही घर बनाकर व वस्तुएं इकट्ठी करके प्रसन्न होते हैं कि ये सब हमारा है. बालको में ओर हममें कोई फर्क नहीं है. केवल इतना ही फर्क है कि हम बड़े बालक हैं वे छोटे बालक हैं. इसी प्रकार बालकों की तरह हमारा जीवन निकल जाएगा. बुद्धिमान नहीं बनेगें हम. साठ-साठ

ाल के बालक होते हैं. याद रखना. सुनने में अजीब लगता है पर ्धि वो ही है. चीज बदल गयी कोई बड़ी बात नहीं है. छोटे घर, िट्टी के घर पर दावा जमाने वाला बालक भी छोटा था. अब घर ड़ा है तो बालक भी बड़ा है. छोटा बालक रेत के घर को अपना ानता है तो बड़े पत्थर के घर को अपना मानते हैं, बात एक ही .

"जैसे बालक माटी लेकर हस्ती आदि बनाते हैं" बालकों ो तो वो अलग-अलग नज़र आते हैं. अपने घर नजर आते हैं िट्टी से मोर, कबूतर, घोड़ा आदिक नजर आते हैं परन्तु बुद्धिमान ो क्या नजर आता है. "बुद्धिमान को रूप एक है मूर्ख भेद बताते " बुद्धिमान के लिए सभी रूप एक हैं. जो मूर्ख है अलग-अलग ताऐगा. बुद्धिमान कहते हैं ये सब मिट्टी है.

ज्ञान प्रकाशे एक ही भासे

सोने के कितने भी गहने बने हुए हों, नथ हो, हार हो, ाजेब हो, अंगूठी हो, परन्तु सुनार की दृष्टि में क्या है, सब सोना ी है. एक कथा आती है. एक पुजारी के पास एक गणेश जी की ूर्ति थी, एक चूहे की मूर्ति,दोनों ढाई-ढाई सौ ग्राम की थी पंडित उन मूर्तियों को सुनार के पास ले गया. उसने सुनार से जाकर कहा- भाई ये दोनों मूर्तियां सोने की हैं. मुझे किसी कारणवश ये बेचनी है. आप ये मूर्तियां ले लो और मुझे अभी पैसे दे दो.

सुनार ने मूर्तियां ले ली और उन्हें तौलने के पश्चात कहा- एक हजार रूपये का गणेश और एक हजार रूपये का चूहा. पुजारी उससे लड़ पड़ा. बोला-ऐसे कैसे होगा? गणेश तो भगवान है और चूहा उसका वाहन है. दोनों एक हजार रूपये के कैसे होगें. सही कीमत बताओ. ऐसे ही तुक्का लगाते हो. सुनार ने कहा-तुम्हारी दृष्टि में चूहा और गणेश है. मेरी दृष्टि में तो सोना हैं. मैं सोना तोलता हूँ जितने का होगा, उतने ही पैसे दूंगा. मेरी दृष्टि आकृति पर नहीं सोने पर है. ऐसे ही मूर्ख की दृष्टि अलग-अलग होती है. पर बुद्धिमान जो होते हैं उनकी दृष्टि सुनार की दृष्टि है अर्थात् वे रूप की तरफ ध्यान न देकर तत्व की तरफ ही दृष्टि रखतें हैं.

"बुद्धिमान को रूप एक है मूर्ख भेद बताते हैं" बुद्धिमान और मूर्ख की दृष्टि में भेद केवल इतना ही है कि मूर्ख की दृष्टि भिन्नता पर है जबकि बुद्धिमान को सभी में एक सत्ता दिखाई देती है. "तैसे ये संसार अज्ञ को नाना होकर भासत है" तैसे ये संसार 'अज्ञ' अज्ञानी को 'नाना होकर भासत है' ये स्त्री है, ये पुरूष है, ये बालक है, ये बूढ़ा है,ये पक्षी है. ये पौधा है,ये लता है, ये पहाड़ है, ये पत्थर है, ये ईंट है. सब अलग-अलग नजर आते हैं. अब हम अपने आप को स्वयं समझें कि हम किस तरफ हैं, ये संसार हमें कैसा भासता है. अलग-अलग नजर आता है तो फिर हम कौन हुए अज्ञानी को अलग-अलग नजर आता है और "ज्ञानवान को अंतर ब्राहर आत्म इक प्रकाशत है" जो ज्ञानवान है उसकी दृष्टि में क्या है. सब एक ही है. अभी विचार करना, बार-बार ये दृष्टांत आपको सुनाया गया है कि कैमरे से बच्चे का फोटो लो तो बच्चे का आएगा. बड़े बूढ़े,स्त्री-पुरूष, जवान, किशोर किसी का भी फोटो खीचों तो फोटो में वही दिखाई देगा परन्तु इन सबका अगर एक्सरे लें तो एक जैसा एक्सरे निकलेगा. हडि्डयाँ सभी की एक ही नजर आऐगीं चाहे बड़ा हो, बच्चा हो,स्त्री हो,पुरूष हो सभी का एक्सरे एक जैसा ही आता है. छाती का एक्सरे लेगें तो सभी के दो lungs आऐगें. एक्सरे की नजर में एक हैं और कैमरे की नजर में सब अलग-अलग है.

ऐसे ही ज्ञानी की दृष्टि सबको एक करके देखती है, वो सभी में उस व्यापक ब्रह्म को देख रहा है, एक आत्मपद को देख रहा है ऐसी दृष्टि ज्ञानी की बन जाती है. पर अज्ञानी को ये जगत अनेक तरह से अलग-अलग भासने के साथ-साथ सत्य लगता है. बड़ा अजीब है ये संसार न ग्रहण किया जाता है, न हीं छोड़ा जाता है. ऐसा क्यों? ऐसा इसीलिये क्योंकि इसके अनेक रूप हमारी दृष्टि में आते हैं. जब अच्छी वस्तु दिखाई देती है तो ग्रहण की इच्छा हो जाती है और जब कोई बुरी वस्तु दिखाई देती है तो त्याग की इच्छा होती है. इसी अधर झूल में न तो मन के द्वारा इसका त्याग कर पाते हैं और न ही इसे ग्रहण कर पाते हैं. परन्तु यदि एक रूप नजर आ जाए तो ग्रहण त्याग से दूर है.न ही इसको ग्रहण किया जा सकेगा ना ही इसे त्यागने की जरूरत है.

रानी के मन में ये भावनाएं जाग रही है कि आत्मा कैसा है? रानी अपने आपको आत्म-स्वरूप जान रही है परन्तु इतना होते हुए भी 'राजा की सेव करे नित वृत्ति विवेक से लाग रही' कर्म करने के साथ मर्यादा भी निभा रही है. हमें भी ये ध्यान रखना चाहिए कि अपनी मर्यादा निभाते चलें. ज्ञान प्राप्त हो रहा है, ऐसा जानकर अपने कर्त्तव्य-कर्मों का त्याग न करें, ज्ञानवान भी अपने कर्त्तव्य को पूरा करते हैं.

ये जो चार वचन आपने सुने हैं.उनका विचार करेगें, विचार से ही आनंद पायेगें. उसके लिये भी गुरू महाराज जी के आशीर्वाद की जरूरत है.



उज्जैन महाकुम्भ ज्ञान अमृत

प्राचीन समय से ही श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध से प्रेम प्रकाश मण्डल के संतो के साथ आकर कुम्भ मेला लगाते थे. आचार्यश्री द्वारा स्थापित कुम्भ मेला परम्परा को सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, सद्गुरू स्वामी शांतीप्रकाशजी महाराज, सदगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज ने चलाकर प्रेम प्रकाश मण्डल के अन्न क्षेत्र (छावनी) कुम्भ मेलों में लगाये. पंचम श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सदगुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज ने आचार्य परम्परा के अनुरूप प्रेम प्रकाश मण्डल के संतो के साथ प्रयागराज में २००१ में विशाल कुम्भ मेला लगाया. सन् २००३ में प्रेम प्रकाश मण्डल के संतो ने सदगुरू स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज के सानिध्य में एक विशाल कुम्भ मेला नासिक में मनाया. अब माह अप्रेल सन् २००४ में गुरूदेव के सानिध्य में भगवान शंकर के महाकाल वन क्षेत्र (उज्जयिनी) कुम्भ मेला में प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र(छावनी) का आयोजन किया गया है. कुम्भ पर्व मनाने के अनेक कारण हैं! पुराणों की कथा के अनुसार समुद्र मंथन से चौदह रत्नों की प्रप्ति हुई उसमें से अमृत का कलश भी निकला अमृत कलश के कारण देव-दानवों मे भगदड़ मच गयी एवं युद्ध प्रारंभ हो गया इस भगदड़ में अमृत की कुछ बूंदे प्रयागराज हरिद्वार नासिक एवं उज्जैन में घड़ा रखने से छलक गई छलकने की गति के आधार पर एक निश्चित समय में प्रत्येक स्थान पर प्रति १२ वर्षों के बाद कुम्भ महापर्व का आयोजन होता है. पर इसमें उज्जैन के कुम्भपर्व का महत्व इसलिए विशेष महत्व का है. क्योकि यहाँ पर सिंहस्थ और कुम्भ पर्व के साथ-साथ आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का दिव्य ज्ञान मेला चैत्र मेला भी इसके साथ मनाया जायेगा. यह मेला प्रेम प्रकाशियों के लिए बड़े महत्व का होता है. उज्जैन नगरी पवित्र क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित है.

पवित्र क्षिप्रा नदी की उत्पतिः- अनेक प्रमाणो में से एक प्रमाण के अनुसार एक बार भगवान महाकालेश्वर भिक्षा के लिए बाहर निकले पर उन्हे कहीं भी भिक्षा नही मिली तब उन्होने भगवान विष्णु से भिक्षा चाही पर विष्णु भगवान ने उन्हें तर्जनी दिखाई महाकालेश्वर ने क्रोधित होकर त्रिशूल से उनकी अंगुली काट दी उसमे से रक्त प्रवाहित होने पर शिवजी ने अपना कपाल उसके नीचे कर दिया जब कपाल भर जाने पर रक्त धारा नीचे बहने लगी तभी से यह क्षिप्रा कहलाई पुराणों में कहा गया है कि सारे भू-मण्डल पर क्षिप्रा के समान कोई दूसरी नदी नहीं है.इसके तट पर क्षण भर खड़े होने से ही जीव की मुक्ति हो जाती है.

महाकालेश्वर दर्शनः-साथ में सारे ब्रह्माण्ड में सर्वपूज्य माने गये तीन लोगों में से भगवान महाकालेश्वर महाकाल भूलोक के प्रधान हैं. ये कालचक्र के प्रर्वतक हैं यह दक्षिणमुखी होने के कारण इनका तांत्रिक क्रियाओं में विशेष महत्व माना जाता है. जो भक्त श्रद्धा से इनके दर्शन करता है. उसकी अकाल मृत्यु से रक्षा होती है. ऐसी मान्यता है.

काल भैरव :- अष्ट भैरवों में प्रमुख श्री कालभैरव का मंदिर बहुत ही चमत्कारिक है. जो ६००० वर्ष के लगभग प्राचीन है यह बात मन्दिर के पुजारी ने कुम्भ मेले की तैयारी के लिए आये सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज एवं प्रेमीयों को उन्होंने बताई. इस मन्दिर की प्रसिद्धि इसलिये है क्योंकि कालभैरव की प्रतिमा यहां मंदिरापान करती है! चाहे वह देशी मंदिरा (शराब) हो या मंहगी विदेशी शराब हो जिसे कालभैरव की मूर्ति में बगैर छेद के मुख पर पुजारी द्वारा लगाकर मंदिरापान कराया जाता है. यह सब प्रत्यक्ष देखने को मिलता है.

श्री सांदीपनि आश्रम (अंकपात क्षेत्र):- महर्षि सांदीपनि व्यास जी के इस आश्रम पर भगवान श्री कृष्ण सुदामा बलराम ने गुरूकुल परम्परा के अनुसार विद्याध्यन कर चौदह विद्याएं चौसठ कलाएं सीखी थीं. भगवान श्री कृष्ण पट्टी पर जो अंक लिखते थे. वे यहां पर धोकर मिटाते थे इसलिये इस क्षेत्र

का नाम अंकपात क्षेत्र पड़ा. अंकपात क्षेत्र में ही सिंहस्थ कुम्भ महापर्व का मेला लगता है.

श्री हरसिद्धि देवी:- स्कन्द पुराण में वर्णन है! कि शिवजी के कहने से देवी ने दुष्ट दानवों का वध किया अतः उनका नाम हरसिद्धी हुआ ! दक्ष यज्ञ-विध्वंस के बाद सती की कोहनी यहां गिरी थी इसलिये इसे सिद्धपीठ एवं शक्तिपीठ कहते हैं!

मंगलनाथ मंदिर :- यह मंदिर उज्जैन का एक महिमावान स्थान है. जिसे मत्सय पुराण में मंगलगृह को भूमि पुत्र कहा गया है. इनकी पूजा से शिव की भक्ति व मुक्ति प्राप्त होती है.

गोपाल मंदिर :- इसका निर्माण सिधिंया राजघराने द्वारा किया गया है. श्रीमंत सिंधिया ने गजनी से युद्ध करके रत्नों से जड़ित हार को गर्भ गृह में लगवाया है. मंदिर का जन्माष्टमी पर्व विशेष पर्व है. वैकुण्ठ चौदस के दिन श्री महाकालेश्वर की सवारी हरिहर मिलन हेतु मध्यरात्रि को यहां आती है. तथा भस्म आरती के समय श्री गोपाल कृष्ण की सवारी श्री महाकालेश्वर को जाती है.

श्री सिद्धवट:- स्कंद पुराण के अनुसार देवाधिदेव महादेव के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध करने के बाद अपनी शक्ति को यहां क्षिप्रा में फेंका था जो पाताल में चली गयी इसलिये इसे शक्ति भेद क्षेत्र भी कहते हैं. माता पार्वती ने इसी वट वृक्ष के नीचे पुत्र कार्तिकेय को भोजन कराया था इस वट वृक्ष को भगवान शिव ने आशीर्वाद देकर कहा कि तुम संसार में कल्प वृक्ष के नाम से जाने जाओगे सम्राट विक्रमादित्य ने यहां तपस्या करके अगिया बेताल की सिद्धि की प्राप्ति की थी जिसकी कहानियां संसार भर में प्रसिद्ध हैं.

श्री भतृहरि गुफा:- जो राजा की तपस्थली थी भतृहरि के नाम से जानी जाती है. कहते हैं भतृहरि की तपस्या से इन्द्र डर गया, तब तपस्या भंग करने के लिये एक शिला फेंकी जिसे भतृहरि ने हाथ ऊपर करके रोक दिया जिससे भतृहरि के हाथ का निशान शिला पर अंकित हो गया जो आज भी दर्शनीय है.

श्रीगढ़ कालिका देवी:- कालीदास की आराध्या देवी थी इनकी कृपा से अल्पज्ञानी कालिदास को विद्वता प्राप्त हुई थी

जंतर मंतर:- जयपुर के राजा जयसिंह ने कई वैधशालाएं बनवाई थीं. जिनमें से केवल उज्जैन की वैधशाला आज सुचारू रूप से कार्यरत है. जो खगोल अध्ययन के लिये महत्वपूर्ण केन्द्र है. इसके अलावा अनेक प्राचीन महत्वपूर्ण मंदिर एवं स्थान है. जो उज्जैन में फैले हैं.

आधुनिक चार धाम मंदिर:-मेंश्रीद्वारकाधाम, जगन्नाथधाम,केदारनाथधाम एवं बद्री विशालधाम की प्रतिष्ठा की गयी है जो चारों धाम की सुन्दर परिकल्पना को साकार करती है.

कुम्भ पर्व पर आये प्रेमीयों को इनका दर्शन लाभ मिलेगा. स्नान और पूजा शांति तथा मुक्ति पाने के साधन माने जाते हैं पवित्र नदियों में स्नान करना पुण्यदायक माना गया है. इससे पापों का नाश होता है.कहते हैं कुम्भ महापर्व पर देवता भी धरती पर आते हैं और पावन नदियों में स्नान करते हैं जिससे जल की पाप नाशक शक्ति में वृद्धि होती है यही कारण है कि साधु संतों के साथ ही लाखों की संख्या में श्रद्धालु जनता पुण्य का लाभ लेती है. सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आर्दशों उपदेशों का पालन करने वाले प्रेम प्रकाशी सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज उज्जैन में प्रेम प्रकाश मण्डल की छावनी का आयोजन लालपुल के पास जंतर-मंतर रोड पर कर रहे हैं. यह छावनी १०-१२ बीघा में आयोजित की जायेगी यहां से यह सारे दार्शनीय स्थल १ किलोमीटर से २ किलोमीटर तक दूर हैं. बस स्टेन्ड एवं रेलवे स्टेशन भी १ किलोमीटर की दूरी पर है. यहां पर आसानी से पहुंचा जा सकता है. संकलनः-

सुरेश (सांवल) प्रेम प्रकाशी, प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

जीवन-दर्शन

एक संत ने लिखा है कि एक दिन मैंने मुड़के पीछे देखा तो एक व्यक्ति छाया की तरह मेरे साथ-साथ चल रहा था. मैंने पूछा, 'तुम कौन हो, और क्यों मेरे पीछे चल रहे हो?' वह बोला हुजूर मैं शैतान हूं. 'आपके पीछे इसलिए रहता हूं कि कब आप गफलत में आएं और मैं आपके अंदर चला जाऊं.' वे बोले-'भाई, मैं हर क्षण सावधान रहता हूं.मैं सोते-जागते पूरा ख्याल रखता हूं कि तुम मेरे अंदर न आ पाओ. हर विषय में ईश्वर को याद रखता हूं.फिर तुम कैसे मेरे अंदर आने का अवसर पाओगे.'वह बोला-'हां, हुजूर! आप सावधान तो बहुत रहते हैं, फिर भी कोई मौका ढूंढ़ रहा हूं.और वह है भोजन का समय, क्योंकि आदमी भोजन करते समय, जब वह उस भोजन का स्वाद लेता है, तो ईश्वर को भूल जाता है. मैं उसी अवसर को देख रहा हूं. कभी ऐसा अवसर मिले और मैं अपना काम कर पाऊं.' इसीलिए हमारे यहां मान्यता है कि भोजन बड़ी पवित्रता से किया जाए. बनाने वाला पवित्र हो, भोजन करने का स्थान भी स्वच्छ हो. पहले उस भोजन को प्रभु को अर्पण करें. ऐसा भोजन शरीर को पुष्ट करता है, रोगों को दूर रखता है और मनोविकारों से बचाता है.

चमकदार कलश

ओकोनावा द्वीप के किनारे मछुआरों की बस्ती थी. मछुआरे मछलियां पकड़ते और बाजार में बेचकर अपना जीवन यापन करते थे. उनमें एक मछुआरे का नाम सुत्सुमी था. उसकी पत्नी का नाम था-माग्या.

एक बार समद्र में बहुत तेज तूफान आया और भाग्य ने सत्सुमी को धोखा दिया. तूफान में उसका घर बह गया और उसकी पत्नी भी डूब गई. उसको पत्नी से बिछुड़ने का बहुत दुःख हुआ. परन्तु क्या करता? वह दूसरा विवाह भी नही कर सकता था. क्योंकि एक तो वह बहुत गरीब और दूसरा वह सुन्दर भी नही था. धीरें-धीरें उसने इस दुःख को भुलाना चाहा. वह फिर मछलियां पकड़कर बेचता. एक दिन जाल में एक मछली नही फंसी. वह खाली नाव लेकर अपने घर लौटा. अगले दिन भी यही हुआ. आज उसके घर में खाने के लिए कुछ भी नहीं था. अतः वह सिर्फ पानी पीकर ही सो गया. अगले दिन उसने सोचा, आज चाहे कितनी ही दूर क्यों ना निकलना पड़े मछलियां अवश्य ही पकड़नी है. लेकिन भाग्य का कुछ ऐसा बदलाव था कि वह जैसे ही जाल डालता, मछलिया पहले ही भाग जातीं. उसने सोचा, आज भूखा ही सोना पड़ेगा. अंधेरा होता देख वह किनारे की तरफ चल दिया.

अभी किनारा दूर ही था कि उसे लहरों में मछलियां दिखाई दीं. उसने सोचा,चलो एक बार जाल और फेंक कर देखें. शायद कुछ मछलियां आ ही जाएं उसने जाल फेंक दिया और खींचने लगा. जाल बहुत भारी लगा. उसने सोचा, आज तो बहुत बड़ी मछली फंस गई है. जब देखा तो सचमुच बड़ी भारी मछली थी. देखते ही सुत्सुमी खुश हो गया कि आज तो काफी पैसे मिलेंगे और मैं अपने लिए सभी चींजे खरीद सकूंगा. लेकिन यह क्या? मछली बोली, 'देखो सुत्मुसी, मैं तुम्हें जानती हूँ. तुम मुझे छोड़ दो. मैं तुम्हारी मदद करूगीं.'सुनते ही सुत्सुमी के हाथ-पाँव कांपने लगे उसने मछली को छोड़ दिया. मछली ने लहरों में डुबकी लगाई और गायब हो गई. सुत्सुमी उदास वापस चल दिया. जब वह किनारे पर पहुंचा तो उसने देखा कि वही मछली अपने मुंह में मोती दबाकर लाई और उसकी नाव में डाल गई. बोली, 'मैं घर जा रही हूँ. पास ही पहाड़ों पर मेरा घर है. तुम्हें जब भी किसी चीज की जरूरत हो तो वहां आकर तुम मुझे जलपरी के नाम से तीन आवाज देना. मैं फौरन आ जाऊँगी. सुत्सुमी ने घर जाकर मोती कमरे में रख दिया और भूखा ही सो गया. लेकिन थोड़ी ही देर में कही से बड़ी मीठी-मीठी खुशबू आ रही थी. उसने आँखे खोली. जहां मोती रखा था. वहाँ एक कलश पड़ा था. उसमें स्वादिष्ट भोजन था. उसने खूब पेट भरकर भोजन किया और आराम से सो गया. अब तो वह रोज ऐसा ही करने लगा. बस, बर्तन में से खाना खा लेता और आलसी की तरह पड़ा रहता. उसने मछलियां पकडना जाना बंद कर दिया. सभी सोचने लगे कि यह सुत्सुमी खाता क्या है. आजकल तो इसकी सेहत भी अच्छी होती जा रही है. एक दिन कुछ लोग यह रहस्य जानने के लिए उसके घर आए. वह बहुत भोला था. उसने सारी कहानी सच-सच बता दी. रात्रि को ही तेज वर्षा हुई और वह बर्तन गायब हो गया. वह सारे दिन भटकता रहा कि कोई उसे खाना दे दे. परन्तु किसी ने भी नहीं दिया. वह वापस अपनी झोपड़ी में आया और भूखा ही सो गया. उसने सोचा, 'अब कल सुबह वहीं जाऊंगा.

सुबह वह उसी पहाड़ी पर गया और उसने तीन आवाजें दीं. मछली मौजूद थी. उसने अपने कलश के खोने की बात बताई. मछली एक और कलश उठा लाई और उसे समझाया कि 'इसकी बात किसी से न कहे.' वह बर्तन लेकर किनारे पर पहुंचा तो उसने देखा कि तूफ़ान ने सब के घर बर्बाद कर दिए परन्तु उसकी झोपड़ी वहीं है. सब स्त्री-पुरूष, बच्चे भूख से तड़प रहे हैं और मैदान में बैठे हैं. उसे उन पर बड़ी दया आई. उसने अपने बर्तन में से सबको खाना खिलाया लेकिन रात को ही वापस उसका बर्तन चोरी हो गया. वह फिर जलपरी के पास गया और उसे बर्तन चोरी की बात बताई. तब जलपरी बोली,'तुम बहुत भोले और ईमानदार हो. अब बस्ती में मैं खुद तुम्हारी पत्नी बनकर रहूंगी. मुझे उन सबको ठीक करना है.' और उसने सुन्दर युवती का रूप धारण कर लिया. सब बस्ती वाले उसे देख कर हैरान हो गये थे. क्योकि सुत्सुमी ने उनको सब कुछ बता दिया था. बस्ती वालों ने सोचा कि क्यो ना उसकी पत्नी को ही चुराकर कहीं बांध दें. फिर हम जो कुछ भी मांगेंगे, हमें भी मिल जाएगा. उन्होने ऐसा ही किया. उसे चुराकर एक कमरे मे बंद कर दिया. वह बहुत रोई परन्तु उन्होने लालच में नही छोड़ा.

जब सुत्सुमी वापस घर आया तो पत्नी को न देखकर बहुत दुखी हुआ. वह जगह-जगह ढूंढ़ने लगा. परन्तु वह नहीं मिली. थोड़े ही देर में बहुत तेज तूफान आया और सारी बस्ती को बहा ले गया. उसी तूफान में उसने उस मछली को देखा. सुत्सुमी ने कई आवाजें दीं परन्तु वह नहीं बोली. वह उदास वापस अपनी बस्ती में आया. बाकी बची थी सिर्फ उसकी झोपड़ी, नाव और जाल जिससे उसे फिर अपनी जीविका चलानी थी।

(संकलित

२६ जनवरी बसंत पंचमी पर विशेष





ऋतु सार

ऋतुओं का सिरताज बसन्त

(सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराजजी के प्रवचनों से)

आई ऋतु बसन्त की-चमन खिली गुलजार.
स्वामी चिमन में है-भवरे करत गुंजार..

परमात्मा के द्वारा बनाई गई सृष्टि में सब काम क्रमबद्ध चलता है. उन्ही के द्वारा छः ऋतुएं बनाई गई हैं. जो अपने क्रमानुसार परिवर्तित होती रहती हैं. इन्ही ऋतुओं का सिरताज है बसन्त. जो अपनी अलग ही आभा प्रदर्शित करता है. बसन्त के आगमन पर चहुं ओर हरियाली नई कोपल-कोपल खिल उठती हैं. मौसम भी बड़ा ही सुहावना होता है. बसन्त ऋतु की महिमा सभी सन्तों-महात्माओं ने विशेष रूप से गाई है. इसी प्रकार सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की "बसन्त ऋतु रंगवारी रे" प्रवचन कैसेट में बसन्त ऋतु की महिमा व स्वास्थ्य सम्बधी कुछ महत्वपूर्ण तथ्य भी बताये है. इनको अपनाने से शरीर तन्दुरूस्त रहता है.

बसन्त ऋतु में महत्वपूर्ण

1. बसन्त ऋतु में जिज्ञासुओं को प्रातःकाल शीघ्र उठकर गुरूमंत्र का अभ्यास करना चाहिये. जिससे परमात्मा में मन शीघ्रता से लगता है व सुख-शन्ति की अनुभूति प्राप्त होती है.

2. बसन्त ऋतु में प्रातःकाल २-३ मील पैदल घूमना चाहिये, हो सके तो घर से पैदल चलकर कहीं सत्संग स्थल पर जाकर सत्संग का अमृत पान करें.

3. बसन्त ऋतु में चाय व खटाई का प्रयोग कम करें.

4. बसन्त ऋतु में शरीर की तन्दुरूस्ती के लिये एक बादाम गिरी रात को मिट्टी के बर्तन में भिगोकर रखें. सुबह दातुन के बाद बादाम की गिरी का छिलका उतार कर उसे रख लेवें. पहले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन ऐसे एक-एक करके चालीस दिनों तक क्रमानुसार बढ़ाते हुए उसमें मिश्री व मक्खन मिलाकर खाएं. फिर शरीर देखना कितना तन्दुरूस्त हो जाता है.

5. बसन्त ऋतु में दिमाग की तन्दुरूस्ती के लिए एक छंटाग बादाम तेल एक छंटाग खसखस तेल, एक छंटाग कद्दू तेल, तीनों को मिलाकर रखें. रात्री को उस तेल की दो-चार बून्द सिर में डालकर मालिश करें. बाद में पतला कपडा़ बांध लेवें. दो महीनें ऐसा करने से दिमाग की तन्दुरूस्ती बढ़ती है.

6. जिस प्रकार भंवरा फूलों की सुगन्ध लेता है. उसी प्रकार जिज्ञासु रूपी भंवरा सत्संग रूपी फूलवाड़ी का अमृतपान करे.

7. ये शरीर पानी व हवा पर निर्भर रहता है अतः प्रातःकाल १.२ मील पैदल घूमना चाहिए. जिससे बसन्त की शुद्ध हवा आपके शरीर को स्पर्श करेगी और शरीर की बीमारियां दूर होगी.

एक साधक

जैसे आप, वैसे लोग

एक अजनबी एक नए शहर में पहुंचा. वह शहर के बारे में, वहां के लोगों के बारे में जानना चाहता था, अतः उसने सड़क किनारे बैठी एक महिला से पूछा-'यह शहर कैसा है?' महिला ने जवाब दिया-'तुम जिस शहर से आए हो, वह कैसा था?' अजनबी बोला-'क्या बताऊं, बहुत ही बुरा था वह शहर. जीना दूभर हो गया वहां के लोग तो मतलबी और एहसान फरामोश थे.' महिला ने जवाब दिया-'यहां भी वैसे ही लोग मिलेंगे तुम्हें.' थोड़ी देर बाद दूसरा अजनबी महिला के पास पहुंचा और वही सवाल पूछा-'यह शहर कैसा है?' महिला ने पुराना सवाल दोहराया, जहां से तुम आए हो, वह कैसा था? 'बहुत अच्छा, बहुत ही मिलनसार और मददगार लोग थे. उन्हें छोड़कर मुझे बहुत दुःख हो रहा है.' इस पर समझदार महिला का जवाब था-'यहां भी तुम्हें वैसे ही नेकदिल लोग मिलेंगे.' यह कहानी द बैस्ट ऑफ बिट्स एंड पीसेज से ली गई है.

भक्त-गाथा

भील-भीलनीकी शिव-भक्ति

पंजाब में सिंहकेतु नाम का एक धर्मात्मा राजा था. एक बार वह शिकार खेलने जंगल में गया. रास्ते में उसे एक स्थान पर पुराने शिवमंदिर का खंडहर मिला. उस मन्दिर में सुन्दर शिवलिंग की एक मूर्ति थी. राजा के साथ चण्ड नामंक एक नौजवान भील था. उसको यह मूर्ति बड़ी सुन्दर और प्रिय मालूम हुई, उसने पूर्वजन्मों के पुण्य से उस मूर्ति को बड़े प्रेम एवं आदरपूर्वक शुद्ध, सरल भाव से अपने साथ ले लिया एवं प्रेमविह्वल हो राजासे कहा- 'महाराज ! यह सुन्दर शिवजी मुझे रास्ते में मिले हैं, मेरी इनपर बड़ी श्रद्धा है. मैं मूर्ख हूं , पूजा करना नहीं जानता. आप कृपा करके पूजा की विधि बतला दें तो मैं पूजा करके इनको प्रसन्न करूं.' राजाने भीलकी सरलतापर हँसते हुए मजाक के रुप में उससे कहा- 'इन्हें रोज नहलाकर बैठाया करो , फिर फूल-बेलपात से पूजकर धूप-दीप करो. शिवजी को चिता की राख बहुत प्रिय है इनको चिता-भस्म रोज-रोज जरूर लगाया करो, देखना चिताकी ही राख हो, भला ! फिर भोग लगाकर इनके सामने नाचा-गाया करो. ये नाचने से बहुत खुश होते हैं. चिता-भस्म लगाने में कभी चूकना नहीं.'

सरल-हृदय चण्ड राजा के मजाक को अक्षरशः सत्य मानकर ठीक उसी तरह शिव-लिगंकी पूजा करने लगा. पूजन करते कई वर्ष बीत गये, चिता-भस्म के लिये राजाने दो बार जोर देकर कहा था, इसलिये मसानों में जाकर चिता-भस्म वह जरूर लाता, किसी दिन भी चिता-भस्म बिना लगाये वह नहीं रहा. एक दिन उसके पास चिता-भस्म नहीं रही. चण्ड भस्म लाने गया, पर उस रोज उसे कहीं भी भस्म नहीं मिली. वह निराश हो घर लौट आया और अपनी स्त्रीसे कहने लगा- 'प्रिये ! आज मुझ पापीको चिताकी राख कहीं न मिली, शिवजी की पूजा में बड़ा विघ्न हो गया, इनकी पूजा किये बिना मैं कैसे जी सकता हूँ ?' पतिको दुःखी देखकर पतिव्रता भीलनीने कहा- 'मेरे मालिक ! तुम इसके लिये कोई चिन्ता न करो, निर्भय हो पूजा का सामान इकट्ठा करके पूजा शुरु कर दो, चिता-भस्मका प्रबन्ध मैं अभी कर देती हूँ. घरमें आग लगाकर मैं अभी जल जाती हूँ. इससे तुमको कई दिनों के लिये चिता -भस्म मिल जायगी.' चण्ड अपनी प्रिया का त्याग, प्रेम और साहस देखकर चकित हो गया, उसने कहा- 'मेरे मालिक शरीर तो एक दिन गिरने वाला है ही, यदि यह भगवान् सेवा में लगे और तुम्हारी पूजा पूरी हो तो इससे ज्या इसकी क्या सफलता होगी, यह तो इसका बड़ा पुण्य सम कि आज यह शिवजी के काम आयेगा. तुम कोई विचार करो.' भील कुछ भी न बोल सका, वह सहमा-सा रह गय भीलनी ने जाकर स्नान किया और धुली-धोती पहनकर घर आग लगा दी और उसकी फेरी देकर वह शिवजीका ध्य करती हुई प्रार्थना करने लगी.उसकी अनन्य भक्तिपूर्ण-प्रेमपू रहस्यमयी स्तुतिसे यह सिद्ध होता है कि उस अशिक्षि भीलनी को आज भगवान् शिवके तत्व का शिव-कृपा से प ज्ञान हो गया और वह उनकी भक्तिका प्रसाद पाकर कृता हो गयी.वह बोली-'मेरे ईश्वर ! मैं न तो कुबेरका पद चाह हूँ न अक्षय स्वर्ग चाहती हूँ और न मुझे ब्रह्मपद की ही इच है. मेरे चाहे कितने ही जन्म हों, पर सबमें मेरा मनरू भँवरा आपके चरण-कमलों का पराग चूमने में लगा र ऊँचे वर्ण में जन्म लेने,विद्या पढ़ने और शास्त्र-विचार कर से क्या होता है? जिसका चित्त निरन्तर परमेश्वर भक्ति लगा है, त्रिभुवनमें उससे बढ़कर धन्य और कौन है. इ प्रकार प्रार्थना करती हुई वह अग्निमें जलकर भस्म हो गय

चंण्ड भीलने बड़े प्रेमसे उस भस्मसे भगवान शं का पूजन किया. भोग लगाकर वह पुलकित-कलेवर गद-गद स्वरमें पत्नी के त्याग, वैराग्य और भक्तिका स्म करता हुआ प्रभुकी प्रार्थना करने लगा. कुछ ही देर में अपने समीप दिव्य देह धारण किये भीलनी खड़ी दिखल दी. वह आश्चर्यचकित हो गया. उसने पूछा-'प्रिये ! तुम अभी आगमें जल गयी थी न? यहां कैसे आ गयी? मैं स तो नहीं देख रहा हूँ ?' भीलनी ने उत्तर दिया-'सपना है प्राणनाथ! सचमुच तुम्हारे सामने मैं ही तुम्हारी दासी हूँ मुझे तो पता भी नहीं कि मैं कब जली थी' दोनों आश्चर्यपूर्ण घटनाकी आलोचना कर ही रहे थे कि एका आकाश से एक अलौकिक विमान वहां उतर आया शिवजी के दिव्य दूत उन दम्पतिको आदरसहित विमा बैठाकर शिवलोकमें ले गये.

संक

जयपुर समाचार दर्शन

गौमाता सेवा सर्वोपरि धर्म है

जयपुर में सद्‌गुरू टेऊँराम गौशाला का उद्‌घाटन



महामहिमामयी गौ हमारी माता है. उसकी बड़ी ही अदभुत महिमा है वह सभी प्रकार से पूज्य है. समस्त वेद, शास्त्र, पुराण,रामायण,भागवत,महाभारत आदि सद्‌ग्रन्थ सभी गौमाता की महिमा से भरे पड़े हैं. गौमाता की रक्षा और सेवा से बढ़कर कोई दूसरा महान पुण्यकर्म नहीं है. गौमाता परब्रह्म श्रीकृष्ण भगवान की परम आराध्य है और गौमाता भवसागर से पार लगाने वाली साक्षात् देवी है. प्रातःकाल गौमाता का दर्शन व तन-मन से सेवा करनी चाहिए. जितना हो सके गौ माता के दूध-दही-घी का सेवन करना चाहिए. शास्त्रानुसार अनेक सन्त महात्मा ऋषि मुनि राजा महाराजाओं व भक्तों ने गौमाता को विशेष महत्व देते हुए गौ की सेवा करके अपने को धन्य-धन्य बनाया. ऋषि परम्परा को ध्यान में रखते हुये हमारे प्रेमप्रकाश पंथ के प्रवर्तक आचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी सर्वप्रथम टण्डाआदम के अमरापुर दरबार डिब पर गौशाला बनवाई. जिससे गौमाता की सेवा हो सके एवं पवित्र गाय का शुद्ध दूध सन्तों को प्राप्त हो सके. उनके पश्चात् सदगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने भी पावन श्री अमरापुरधाम जयपुर में भी अमरापुर गौशाला का निर्माण करवाया. उसके बाद सद्‌गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज ने उल्हासनगर आश्रम पर विशाल गौशाला बनवाई. जहा अब ८००-६०० गायों की निष्काम भावना से सेवा की जाती है. सद्‌गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज की हार्दिक अभिलाषा थी कि जयपुर के गुलाबीनगर में बहुत बडी गौशाला हो. उन्हीं के प्रेरणा व आशीर्वाद से जयपुर की पावन नगरीमें रविवार २१ दिसम्बर २००३ को मानसरोवर में विशाल "सद्‌गुरू टेऊँराम गौशाला" का भव्य उद्‌घाटन श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डल के पावन सानिध्य में किया गया.जिसमें संतमनोहरलालजी,संतहरिओमलालजी,संत हीरानंदजी,संत दयाप्रकाशजी,संतमोनूरामजी आदि सन्तोंने भाग लिया.

रविवार २१ दिसम्बर को चारों ओर गौशाला के उद्‌घाटन का समाचार फैल चुका था.दूर-दूर से प्रेमी अमरापुर दरबार पहुंचे. सत्संग आदि के पश्चात् प्रातः ११ बजे स्वामी जी व संतमण्डल तथा सभी प्रेमियों ने गौशाला की ओर प्रस्थान किया.लोगों के वहां तक पहुंचाने के लिए श्री अमरापुर दरबार से बसों की व्यवस्था की गई थी.स्वामी जी के उद्‌घाटन स्थल पर पहुंचने के कुछ ही क्षण पश्चात् सम्पूर्ण गौशाला परिसर श्रद्धालुओं से भर गया.परिसर में ठीक सामने की ओर तैयार किए गए विशाल मंच पर स्वामीजी व अन्य संतगण विराजमान हुए.मंच के बाईं ओर पुष्पों की आकर्षक झांकी में सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का तैलीय चित्र अत्यंत ही सुन्दर रूप से सुशोभित हो रहा था तथा आचार्य जी की १५ फुट ऊँची तस्वीर का दर्शन कर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि स्वामी जी यहीं प्रत्यक्ष रूप में उपस्थित हों तथा अपने आशीर्वाद की बरखा से श्रद्धालुओं को अभिभूत कर रहे हों.सभी संतो ने श्रीकृष्ण व गौ महिमा के भजन गाकर श्रद्धालुओं को तृप्त किया.तत्पश्चात् स्वामी जी ने सत्संग प्रारंभ किया. स्वामी जी ने भी अपने प्रवचनों में गौ पूजन व गाय माता की महिमा बताकर श्रद्धालुओं को तृप्त किया.सत्संग के पश्चात् गौशाला की सेवाकार्य में संलग्न विभिन्न प्रेमियों को स्वामी जी ने पाखर पहनाकर आशीर्वाद प्रदान किया.आरती व पल्लव के साथ सत्संग समाप्त हुआ.

विशेषताएं:-
१. तीन बीघा भूमि के अंतर्गत बनाई गई है यह विशाल गौशाला.
२. अग्रभाग में विशाल सुंदर बगीचा
३. आचार्यश्री की विशाल प्रतिमा आकर्षण का केंद्र
४. आरंभ में ४०-५० गौमाता के लालन-पालन का उद्‌देश्य

मंच के पृष्ठभाग में विभिन्न संतो के साथ बैण्ड बाजों की मधुर संगीत के बीच सद्‌गुरू महाराज जी व सन्तमण्डल द्वारा गौशाला का उद्‌घाटन किया गया.गौमाता की पूजा व आरतीकर उद्‌घाटन का कार्य सम्पन्न हुआ. सभारोह में बच्चे, बुजुर्ग व महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया.हर्षपूर्वक भण्डारा व प्रसादी ग्रहण कर प्रेमीगण तथा मांगियावास गांव के निवासी भी अभिभूत हुए.अन्त में विशाल भण्डारे में ग्रामवासीयों के साथ सम्मिलित हजारों प्रेमीयों ने सद्‌गुरू महाराज जी का पावन प्रसाद सश्रद्धा ग्रहण किया.

दीपक मनवानी (जयपुर से)

यात्रा दर्शन

सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्त मण्डली का देशाटन

अजमेर में स्वामी बंसतराम वर्सी उत्सव

वर्ष 2004 का शुभारम्भ हुआ खार मुम्बई में सत्संग–समागम के साथ

भुसावल में सत्संगानन्द (30 नवम्बर 2003)

परम पूजनीय सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्त मण्डली के साथ जलगाँव में प्रेमियों को अमृत पिलाते हुए ३० नवम्बर को प्रातः भुसावल पधारे. भुसावल के प्रेमियों का प्रेम तो आज उछालें मार रहा था, प्रेम की अधिकता में सद्‌गुरू महाराज के दिव्य दर्शन पाकर प्रेमियों के आंखों से नीर बहते देखा गया. स्वागत सत्कार के पश्चात् प्रवास स्थल प्रातः १० बजे पूज्य स्वामी जी व सन्तमण्डली ने भोजन, विश्राम कर सायं सत्संग स्थल सिन्धी पंचायती गुरूद्वारे की ओर प्रस्थान किया, यहां पर सायं सत्संग की अमृत धारा का पान भुसावल सहित जलगांव व समीपस्थ अनेक क्षेत्रवासियों ने किया. भुसावल में रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रेमियों सत्संगियों को आशीर्वाद करते हुए १ दिसबंर को प्रातः ७ बजे रावेर के लिये सड़क मार्ग से प्रस्थान किया.

रावेर –बुरहानपुर (1–2 दिसम्बर 2003)

रावेर (जिला जलगांव) में प्रातः ६ बजे पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली के पहुंचने पर नगरद्वार से ही स्वागत सत्कार का सिलसिला शुरू हुआ, यहां पर प्रेमियों के घर-परिवारों को अपने चरणारविन्द से पावन करते हुए सत्संगामृत पिलाकर बुरहानपुर की ओर सद्‌गुरू महाराज का काफिला बढ़ चला. बुरहानपुर में प्रातः ११:३० पर पंहुचे, श्री अशोक कुमार चावला के नेतृत्व में प्रेमियों का समूह पहले से ही नगर प्रवेश द्वार पर प्रतीक्षारत था, यहां पर भारी हर्षध्वनि के साथ पुष्पवर्षा करते हुए प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी का स्वागत-सत्कार किया, यहां से गाड़ियों के काफिले में पूर्व नियत स्थान पर पहुंचकर बैण्डबाजों के साथ एक भव्य शोभायात्रा सद्‌गुरू महाराज जी के स्वागतार्थ निकाली गयी. शोभायात्रा का समापन प्रवास स्थल अशोक चावला जी के निवास पर हुआ सांय ५ से ७ बजे तक व २ दिसम्बर को प्रातः सायं सत्संग की अमृतवर्खा विशाल सत्संग पण्डाल में सद्‌गुरू महाराज जी व सन्तमण्डल द्वारा की गयी,जिसमें हजारों की संख्या में नगरवासियों ने सन्तदर्शन सेवा सत्संग का लाभ प्राप्त किया.

जयपुर (3 दिसम्बर 2003)

बुरहानपुर से रेलमार्ग द्वारा ३ दिसम्बर २००३ को गुरूधाम श्री अमरापुर स्थान पंहुचे.

शीतल गीता मन्दिर अजमेर में (4 दिसम्बर 2003)

सत्‌गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज के परमशिष्य पण्डित शीतलदासजी की कर्मभूमि शीतल गीता मंदिर अजमेर में आयोजित गीता जयन्ती महोत्सव (४ दिसम्बर) में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पधारने पर पं. मोहनदास देवजानी, भागीरथ देवजानी, भीष्म देवजानी (गीता मंदिर अजमेर),श्री नारायणदास रतनानी, टीकमदास पंजाबी (ट्रस्टी प्रेमप्रकाश आश्रम आदर्शनगर अजमेर) भगतशंकर नारवानी,(ब्यावर से पधारे)नानकराम नरेन्द्र कुमार व बालिका मण्डली एवं असंख्य प्रेमियों ने माल्यार्पण से स्वागत किया.

सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ संत दयाप्रकाश, संत नन्दूराम प्रेमप्रकाशी, संत भोलानाथ प्रेमप्रकाशी

भगत श्रीमुक्त, भगत मूलचन्दजी ने गीता जयन्ती पर अपनी अमृतवाणी द्वारा समस्त प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया.

गीताजयन्ती महोत्सव पर प्रेम प्रकाश आश्रम दिल्लीगेट अजमेर से पधारे संत शिरोमणी स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्रीजी ने बतलाया कि देश विभाजन से पूर्व भारत-भूमि पर बहुत सन्यासी थे जो भारत देश में प्रेंमियो को गीता-रामायण आदि धर्म ग्रन्थ का उपदेश देकर लाभान्वित करते थे. परन्तु सिन्ध में ऐसे संत सन्यासीयों की कमी थी, तब सिन्ध प्रान्त के खण्डू ग्राम में अवतार धारण कर सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने लोककल्याण एवं जीवों के उत्थान के लिए गीता एवं रामायण आदि ग्रन्थों के सार से श्रीप्रेम प्रकाश ग्रन्थ की रचना की एवं प्रेमप्रकाश मण्डल का प्राद्रुर्भाव किया. सद्गुरू महाराज ने सिन्धी समुदाय को सिन्ध प्रान्त में श्रीमद् भगवद् गीता आदि का ज्ञान देने के लिए अपने परम शिष्य पं.शीतलदास को प्रेरित किया.पं.शीतलदासजी ने सद्गुरू महाराज की आज्ञा का पालन जीवनपर्यन्त किया.

श्रीमद् भगवद्गीता जयन्ती महोत्सव पर सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने सद्गुरू महाराज की महिमा को बतलाते हुए अपनी अमृतमयी वाणी में बतलाया किः-

दोहा- पूर्व पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार.
कह टेऊँ तिहं सफल कर सुमरे सृजणहार..

भजन- हिन देहीअ खे जीव चराचर चित सां सभई चाहिन.
देवी देवता किन्नर गंधर्व भाग वदे सां पाइनि था.
अहिड़ी दुर्लभ देहीअ खे छदि गफलत मे न गवांए रे.
मिल्यो मनुष्य जन्म तोखे आहे सो व्यर्थ छदि न विञांए.
हर-हर अहिड़ो मिले न चोलो वठु तूं सफल बणांए.

भजन- मन जो मोहु मिटायो, गुरूअ खां ज्ञान वठी.
मोह जहिड़ी नां बी बीमारी, दुखी कया जहिं सभु नर नारी.

सद्गुरू महाराज ने हमें समझाया है कि हमारे पूर्व संस्कारों पुण्यों से यह मानुष चोला मिला है, इस मानुष चोले को जीव चौरासी लाख योनियों के बाद प्राप्त करता है. पूर्व जन्म के पुण्य-संस्कारों एवं कर्मों के अनुरूप जीव को इस जन्म के अपने कर्म भुगतने पड़ते है. इसलिए गुरू महाराज ने बचपन में ही संसार के सब भौतिक सुख-मोह ममता, माया को त्याग वैराग्य धारणकर जंगलों एवं श्मशानों में एकान्त में तपस्या कर गुरू से नाम सुमरन का ज्ञान प्राप्त कर नारायण को प्राप्त करने का मार्ग खोजकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त किया. और हमें भी उसे प्राप्त करने का मार्ग बतलाया. मानुष देही जो बहुत ही दुर्लभ है उसे ऐसे ही नहीं गंवाना चाहिये, हमें इसके लिए एक कामिल गुरू की शरण में जाकर उनसे नामदान प्राप्त कर एवं अज्ञानाधंकार दूर करने के लिए गुरू महाराज से ज्ञान प्राप्त कर अपने हृदय में सुमरन की ज्योति जलाकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना चाहिए. इसे गुरू महाराजजी ने एक दृष्टांत द्वारा भी समझाया कि- एक वृद्ध माता के कमरे में उसकी सुई गिर गई वह वृद्ध माता अज्ञानतावश अपनी सुई उस अंधेरे कमरे में ढूंढ़ने की बजाय बाहर जल रहे बिजली के खंभे के आस-पास ढूंढ़ने लगी, जबकि उसकी सुई उसके अन्धेरे कमरे में थी जहां उसे दीपक से रोशनी में सुई ढूंढ़ना चाहिए थी. इसी प्रकार हमारे अन्दर हृदय में प्रभु परमात्मा बैठे हैं किन्तु हम अज्ञानता के कारण उसे अपने हृदय के बाहर अन्यत्र तलाश करते हैं. जबकि हमें गुरू की शरण में जाकर उनसे ज्ञान प्राप्त कर नाम सुमरन के दीपक को अपने हृदय मे प्रज्चलितकर प्रभु से आत्म साक्षात्कार करना चाहिए.

ज्ञान के विषय में संत शिरोमणी स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्रीजी ने बतलाया कि प्रत्येक कार्य करने पर उसका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है तभी हम सही लक्ष्य को प्राप्त होंगे- जैसे-दान करने का ज्ञान यज्ञ करने का ज्ञान आदि,यदि दान सही नहीं हुआ अथवा यज्ञ सही विधिवत् रीति से नहीं हुआ तो उसका जो फल होता है वह हमें भुगतना पड़ता है. इसलिए सही ज्ञान हमें गुरू की शरण में प्राप्तकरके नाम का सुमरन करना चाहिए.आगे सद्गुरू महाराजने समझाया कि-

दोहा- हरि मेली है संतजन, हरि से देत मिलाए.
कह टेऊं छोड़त नहीं, जो जन शरणी आऐ.

भजन- मनड़ा तोखे आंऊं समझायां, समझायां मां त समझायां.
समझण जी हीअ महिल अथेई, समिझी वठु कर सफली देही.

भलो तुहिंजो थो मां चाहियां, हिक-हिक दम जो मुल्हु लखु लखु थी.

नाम बिना मुल्हु कखु थी, गाल्हि सच्ची मां गाल्हायां.

स्वामी जी ने हमें बतलाया कि हमें विचार करना चाहिये कि जीवन का सार क्या है, हमारा लक्ष्य क्या है, हम इस सांसारिक बंधनों, दुख-क्लेशों एवं मानसिक चिन्ताओं से कैसे छुटकारा प्राप्त कर सकते हैं. इन सबका हल सद्गुरू महाराज क़ी शरण में जाकर उनसे नाम सुमरन का दान प्राप्त कर इस भवसागर से पार होना चाहिए. जब युद्ध में अर्जुन मोह के सागर में डूब गया था तब भगवान श्रीकृष्ण को अर्जुन ने अपना गुरू बना सखा बनाकर उनसे श्रीमद्भगवत् गीता का ज्ञान प्राप्त कर मोह-ममता के जाल से निकलकर अपने लक्ष्य को प्राप्त किया. हमें सत्संग में भी जिज्ञासु होकर सत्संग सुनना चाहिए तभी ही हम उस सत्संग के सत्शब्दों को ग्रहण कर सकेंगे. जैसे एक कक्षा में बहुत बच्चे पढ़ने आते हैं, अध्यापक सबको समान रूप से पढ़ाते, समझातें हैं. परन्तु उनमें से जो बच्चा ज्यादा एकचित होकर अध्यापक के द्वारा समझाये गये पाठ को अच्छी तरह ग्रहण करता है वह कक्षा में सभी बच्चों में प्रथम आता है. उसी तरह भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवत् गीता में अर्जुन से कहा-हे अर्जुन! तुम अपने चंचल मन को ...ार की आसक्ति-मोहमाया एवं भौतिक सुख साधनों से वृत्ति हटाकर अपना ध्यान जिज्ञासु की तरह जागृत कर मेरे द्वारा कहे गये उपदेशों को अपने हृदय में धारण कर भवसागर से पार हो सकते हो. इसी बात को समझकर अर्जुन अपने लक्ष्य में सफल हुआ.

सद्गुरू महाराज की प्रेरणा से पूज्य पं.शीतलदासजी ने भी श्रीमद्भगवद् गीता के उपदेशों को हमें सुनाकर हमारे अन्दर अज्ञान की काली चादर हटाकर ज्ञान की रोशनी प्रकाशितकर हम में गुरू के नाम सुमरन करने की ज्योत प्रज्वलित की. आगे स्वामीजी ने बतलाया कि-

भजन- दिल मे तस्वीर तेरी होठों पे तेरा नाम.

मन मेरा तुमको पुकारे स्वामी टेऊँराम.

भजन-मुहिंजा सतूगुरू सांई दिलि मां शल नाम न तुहिंजो विसिरे.

भलि तखु मिले पातशाही मूं या दरि-दरि मिले गदाई मूं.

भलि मिले न हिकड़ी पाई मूं त बि नाम न तुहिंजो विसिरे.

पूज्य स्वामी जी ने हमे श्रीमद्भगवद् गीता प्रेम प्रकाश ग्रंथ के उपदेशों का पालन करने एवं संतो महापुरूषो द्वारा बतलाये गये मार्ग पर चलकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने का आह्वान किया. इसी के साथ सद्गुरू महाराज ने पल्लव पाकर सत्संग समारोह का समापन कर रात्रि ६ बजे संत मंडली के साथ बड़ौदा के लिए प्रस्थान किया.

(मोहन शिवनानी अजमेर से)

बड़ौदा में गीता-जयंती (5 से 8 दिसम्बर)

152 गीता पाठ रखे गये

बड़ौदा में माता मीरा मंदिर में गीता जयन्ती महोत्सव धूमधाम से मनाया गया. श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व श्री गुरुग्रंथ साहब का पाठ रखा गया. इस गीता जयन्ती महोत्सव में पूज्य सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज अजमेर से अहमदाबाद होकर बड़ौदा पधारे, जिनके स्वागत के लिये सैकड़ों प्रेमी श्री झूलेलाल मंदिर पर उपस्थिति थे. पूज्य स्वामी जी के पहुंचने पर जलूस निकाला गया,बैण्डबाजों व जयघोष ध्वनिके साथ आतिशबाजी द्वारा स्वागत करते हुए सन्त कंवरराम मंदिर पर पहुंचे, यहां पर भी फूलमालाओं से स्वागत किया गया.इस पंचदिवसीय महोत्सवके मध्य-निकटवर्ती आनन्द व पेटलाद शहरों में भी प्रेमियों को दर्शन व सत्संग का लाभ भी सद्गुरू महाराज द्वारा प्रदान किया गया.दिनांक ८ दिसम्बर के विशेष दिवस पर हवन सत्संग पाठों का भोग व ध्वजावन्दन भी किया गया, तत्पश्चात् आम भंडारा हुआ जिसमें हजारों प्रेमीयों ने प्रसाद ग्रहण किया. सायंकाल ५:३० से ८ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रहा. इस अवसर पर उल्हासनगर निजधाम आश्रम से सन्त ब्रह्मदास जी भी पधारे, आज ही माता मीरादेवी जी का जन्मदिवस भी मनाया गया. अन्त में पल्लव पाकर उत्सव समापन हुआ.

बडौदा में अमर शहीद संत कंवरराम साहब की वर्सी उत्सव के अवसर पर संतश्री के पौत्र श्री मनोहरलाल जी ने सन्तश्री सतरामदास धाम में भेंट हुई पूज्य सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज वर्सी उत्सव में वहां पहुंचे दो

सन्तश्री मिलकर बड़े प्रसन्न हुए.

बडौदा शहर में ही श्री स्वामी ऊधवदास जी महाराजजी के निवास पर माताकुन्दीजी का स्वास्थ्य देखने हेतु पधारे.

१८ नवम्बर श्री टीकमदास प्रेमप्रकाशी आचार्य सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के चरणों में लीन हुए जिनकी पगड़ी रस्म पर जयपुर से सन्त मोनूराम जी सन्त प्रेमियों के साथ पहुंचे थे. बड़ौदा पहुंचने पर सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज भी सन्तमण्डली सहित उनके निवास पर परिवारजनों को सांत्वना देने हेतु पहुंचकर श्री गुरूदेव आचार्य जी के चरणों में प्रार्थना व पल्लव पाकर अरदास की.

स्वामी बसंतरामजी महाराज की 23वीं पुण्यतिथि (9–10 दिसम्बर 2003)

परम श्रद्धेय सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य वेदान्त केसरी पूज्यपाद स्वामी बसन्तरामजी महाराज की २३वें पुण्यतिथि समारोह ६से १० दिसम्बर तक प्रेमप्रकाश आश्रम दिल्लीगेट अजमेर में संत-शिरोमणी पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के पावन सानिध्य मे सम्पन्न हुआ. इस पुण्यतिथि पर ६ दिसम्बर को प्रातः११ बजे सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, संत जयदेवजी (दिल्ली),संत हरिओमजी (ग्वालियर), संत प्रतापरायजी (मुरैना), संत नन्दूराम प्रेमप्रकाशी, संत लक्ष्मण प्रेमप्रकाशी, संत झामनदासजी (भीलवाड़ा) एवं संत मण्डली के पधारने पर स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री व उपस्थित हजारों प्रेमियों ने स्वागत किया.

आश्रम में ६ दिसम्बर को झूलेलाल भगवान की ज्योति प्रज्वलित की गई, स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज ने ७ दिसम्बर को ७५ बालकों के सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार हिन्दू-रीति रिवाज से करवाये. इस पुण्यतिथि पर अनेक प्रेमियों ने श्रीमद् भगवद् गीता के पाठ भी रखवाये.१०दिसम्बर को प्रातः १०बजे यज्ञ के पश्चात् सद्गुरू महाराज व स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज एवं संत मण्डली के साथ उपस्थित हजारों प्रेमियों ने ध्वजा वंदन कर झंड़ा फहराया और "हम गीत सनातन गायेंगे" भजन बोल रहे थे, सद्गुरू महाराज की आज्ञा से ध्वजा को संत हरिओमलाल व संत प्रतापराय ने स्थापित कर पुष्पवर्षा कर श्रीफल भेंट किया.उसके पश्चात् शहनाई वादन शुरू हुआ और सभी प्रेमी मस्ती में झूमने लगे. दिन को आम भण्डारा किया गया. दोनों दिन प्रातः एवं सायं सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज, संत जयदेव, संत हरिओम, संत झामनदास व संत मण्डली ने अपनी ओजस्वी वाणी में सत्संग कर उपस्थित हजारों प्रेमियों को अमृतपान कराया. ब्यावर आश्रम से पधारे संत भोलानाथ एवं नन्हे-नन्हे ३ बालकों ने भी सद्गुरू महाराज के भजन प्रेमियों को सुनाकर मन्त्रमुग्ध कर दिया.

संत शिरोमणी स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने स्वामी बसंतरामजी महाराज के २३वें वर्सी महोत्सव पर सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की महिमा बतलाते हुए कहा कि स्वामी बसन्तरामजी महाराज अपने गुरूदेव के परम आज्ञाकारी शिष्य थे जिन्होंने गुरूकृपा से इतना वेदान्तज्ञान अर्जित किया कि उन्हें सद्गुरू महाराज ने वेदान्त केसरी की उपाधि प्रदान की. स्वामी बसन्तरामजी ने अपनी ज्ञान साधना से दूसरों को मोक्ष प्राप्ति का मार्ग बतलाते हुए यह स्पष्ट किया कि मोक्ष जल्दी प्राप्त नहीं होता है, मोक्ष हमें अनेक जन्मों के पुण्यों के पश्चात् ही प्राप्त होता है जिसके लिए हमें ज्ञान की आवश्यकता होती है,वह ज्ञान हम गुरू महाराजसे ही प्राप्तकर सकते हैं.जैसे क़िसी बीमारीके निदानके लिए डाक्टरी सलाहसे उसका निदान होता है उसीप्रकार हमारे अन्धकारमय जीवन में गुरू महाराज के नाम सुमरन द्वारा ही ज्योति प्रज्वलित होती है. आगे-संत जयदेव एवं संत हरिओम ने अपनी ओजस्वी वाणी में बतलाया कि इस ज्ञान की प्राप्ति जब होगी जब हम पर सद्गुरू महाराज की कृपा दृष्टि होगी. सद्गुरू महाराज की शरण में जाने पर यदि हम गुरू महाराज के बतलाये गये उपदेशों को सुनकर उसे ग्रहण कर अपनी वृति को संसार के भौतिक सुखों मोहमाया आदि से मोड़ देंगे तो हमारे मनके ऊपर जो अज्ञानकी मैल चढ़ी है वह धीरे-धीरे मिटकर ज्ञान की चादर में परिवर्तित हो जायगी. आगे आत्मज्ञान की प्राप्ति हेतु भजन द्वारा समझाया है-

भजन- उथी मन जागु-जागु, खुल्यो थई भागु-भागु राम खे संभारि तूं.

चौरासी लख जूणिनि मे तो निंड मे वक्त गुजारियो.

मानुष चोलो पाऐ भी तो मूर्ख नांहि विचारियो.

हाणे जपि रामु-रामु, करे शुभ कामु-कामु जन्मु सुधारि तूं.

सद्गुरू महाराजजी ने हमें समझाया कि चौरासी लाख योनियों के पश्चात् यह मानुष देह मिली है इसलिए इस देही को सफल बनाने हेतु गुरू से ज्ञान प्राप्त कर रामनाम का सुमरन करेंगे तो इस भवसागर से बेड़ापार हो जायगा. गुरू के ज्ञान पर दृष्टांत देते हुए समझाया कि:-एक चोर जब मर रहा था तो अपने पुत्र को चोरी करने की शिक्षाऐं देते हुए बता रहा था (१) हमारा काम चारी करना है (२) कभी सत्संग में मत जाना. यह कहकर चोर मर गया, परन्तु जब चोर चोरी करते हैं तो वह चोरी का वृतान्त माता दुर्गा काली के मन्दिर आकर बतलाते हैं. जब चोर का बेटा चोरी करके आ रहा था तो रास्ते में सत्संग चल रहा था उसके कानों में एक शब्द पड़ा कि "भगवान की मूर्ति की परछाई नहीं होती" जब वह चोरी करके काली माता के मन्दिर में चोरी का वृतान्त सुनाने गया तो वहां मूर्ति के पीछे छिपे राजा के गुप्तचर की परछाई को देखा तो उसे सत्संग की बात याद आई कि मूर्ति की परछाई नहीं होती. उसने चोरी वाला वृतान्त माता की मूर्ति को नहीं सुनाकर हाथ जोड़कर चला गया. और मन में स्मरण किया कि सत्संग के एक शब्द सुनने से मैं कैद होने से बच गया. तो संतो की शरण में जाने से इस संसार के भवसागर से पार पहुंच सकता हूँ. वह चोर चोरी छोड़कर अच्छे कार्य आरम्भ करके गुरू की शरण में आया. आगे सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने हमें अपनी अमृतवाणी में समझाया कि सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज, स्वामी बसन्तरामजी महाराज के वर्सी महोत्सव मनाये जाते हैं. हमें इन महापुरूषों के उपदेशों आचरणों को अपने जीवन में ग्रहण कर इस मानुष देही को सफल बनाना चाहिये. आगे सद्गुरू महाराज ने हमें बतलाया कि-

दोहा- गफलत में न गंवाइये, मानुष देह महान.

कह टेंऊँ तुम जाग के, भज ले श्री भगवान.

भजन- मनड़ा मुहिंजा गफिलत मे न गुजारि तूं, जागी पाणु संभारि तूं.

चौरासी लख जूणनि अन्दर मानुष जूणी ज़ाणिजि सुन्दरू.

तंहि मे गोल्हिजि सत् चेतनं खे जो आहि सर्व सुखनि जो मन्दरू.

ध्यानु तंहिजो धारि तूं.

भजन- लोक सज़ो भली करे खुवारी, नाम जो नालो समझु न भारी-हरे राम.

नाम सां नीह लगा़यां मां, बि़यो संसो शोक न पायां मां-हरे राम.

भजन- जल रही थी सब कुटियाऐं, तो भी किसको दी ना दुहाई.

गम खाकर हंसते रहे, कहते थे राम रसाई.

दोहा- चाह नहीं, चिन्ता नहीं मनवा बेपरवाह.

जिस पर गुरू महाराज की कृपा हो जाती है समझो उसपर ईश्वर की छाया होती है. उसके सारे दुःख दर्द समाप्त हो जाते हैं. जब सद्गुरू महाराज के दरबार की सारी कुटियाऐं एवं झोपड़ियां कुछ अज्ञानियों ने जला दी तब भी गुरू महाराज बिना किसी गम अथवा शोक के एकचित मन से इकतारा हाथ में लेकर संत मंडली के साथ प्रभु के गुणगान करने में मस्त थे और कहते यह भी भगवान की एक लीला है. ऐसी सच्ची श्रद्धा एवं पक्के विश्वास प्रेम से सद्गुरू महाराज ने ईश्वर को प्राप्त कर हमें भी दुःख-सुख सहने का उपदेश दिया. यदि हम भी गुरू अथवा संतों की शरण में सच्ची भावना विश्वास से जायेंगे तो गुरूदेव भी इस संसार के समस्त दुःखों से दूर कर हमें भवसागर से पार करेगा-

दोहा- 'तुलसी' लोहा काठ संग फिरत जल माहिं.

बड़े न डूबत देत है जिनकी पकड़ी बाहिं.

भजन- अन्दर में से पारस आहिन बा़हिर लोह सदा़इन था.

संत सच्चा संसार में हरदमु मन जीते सुख पाईन था.

भजन- खाली न मोटियो कोई सद्गुरू जी दरबार तां.

सद्गुरू जी दरबार तां सांईअ जी दरबार तां.

गूंगो घनश्याम आयो दुखिड़ो दिल जो बुधायो.

मन जी पुकार बुधी सद्गुरू ओ अरज ओनायो.

सत्नाम साक्षी चवदों खिलंदो वियो हिन द्वार तां.

तुलसीदास ने लिखा है एक बड़े से बड़े जहाज में कई मन लोहा लगा होता है परन्तु उसका पैंदा लकड़ी का होने से वो पानी में तैर जाता है उसी तरह हम कितने भी अज्ञानी क्यों न हो एक गुरू महाराज के नाम के आधार पर

हम भवसागर से पार पहुंच सकते है. इस पर कबीरदास ने भी लिखा है क्या मांगू कुछ थिर न रहाई । देखत लोक चलयो सब जाई. अर्थात् मैंने चारों तरफ पदार्थों पर नजर डाली तो यह देने वाला स्वंय मेरे सामने है उनसे मैं क्या मांगू जिसके मांगने के बाद फिर कुछ न मांगू वो चीज है नाम भक्ति, प्रभु भक्ति का जो अन्त समय में साथ जायेगी. इसलिए सद्गुरू महाराज से हमें नाम सुमरन का दान मांगना चाहिये.

भक्ति की वस्तु लेकर अपनी वृत्ति को नाम सुमरन में लगाकर इस भवसागर से पार पहुंचना चाहिये. इसी के साथ सद्गुरू महाराज ने सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज, स्वामी बसंतराम महाराज के गुणों की महिमा बतलाते हुए वर्सी महोत्सव का समापन पल्लव पाकर सबको आशीर्वाद प्रदानकर संतमंडली के साथ रात्रि ६ बजे जयपुर के लिए प्रस्थान किया.

(मोहन शिवनानी अजमेर से)

जयपुर (11 दिसम्बर 2003)

पावन तीर्थ श्रीअमरापुर दरबार में दर्शन-सत्संग उपरान्त १२ दिसम्बर को हिसार के लिये महाराज श्री व सन्त मण्डली का प्रस्थान हुआ.

हिसार शहर में अमृतवर्षा (13 से 15 दिसम्बर 2003)

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की असीम अनुकृपा से परमपूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज हिसार निवासियों पर कृपा दृष्टि करते हुए जब १३ दिसम्बर सायं करीब ५ बजकर १५ मिनट पर पहुंचे तो हिसार के सभी प्रेमीजन जो दो घंटे पहले से ही इतंजार में खड़े थे. जब स्वामी जी की अमरापुर बस आई तो सभी बहिन-भाइयों ने जयकारे करते हुए स्वामी जी को फूलों की माला पहनाते हुए स्वामी जी को रथ पर बैठाया. रथ पर पहले से आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की मूर्ति विराजमान थी. रथ रंगबिरंगे बिजली के बल्बों से जगमगा रहा था. स्वामी जी ऐसे शोभा दे रहे थे जैसे तारों में चंदा.रथ के चारों तरफ भाई-बहिन गाते बजाते बैण्डबाजों के साथ चल रहे थे. रथ राजगुरू मार्केट से होते हुए सभी भाइयों ने दुकानों से उतरकर फूलमालाओं से परमपूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी का स्वागत किया. खूब आतिशबाजियां चलाते हुए रथ आर्या बाजार से गुजरा तो प्रेमियों ने स्वामी जी का फूलमालाओं व आरतियों से स्वागत किया. रथ जब प्रयागगिरि शिवालय पहुंचा वहां पर पहले से ही प्रतीक्षा में खड़े प्रेमियों ने बड़े धूम-धाम से स्वामी जी को माला पहनाते हुए स्वागत किया.छतों से फूलो की वर्खा होते हुए रथ प्रेमप्रकाश मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंचा तो स्वामी जी का पूजन करते हुए छोटे-छोटे बच्चों ने स्वामी जी के करकमलों द्वारा रिबन कटवाया और बैण्डबाजों के साथ स्वामी जी ने प्रेमप्रकाश मंदिर में प्रवेश किया. जब स्वामी जी मंच पर बैठे तो बहिन-भाइयों ने गाते-बजाते फूलों की माला से स्वामी जी का स्वागत किया और धुनी लगाई-धन गुरू टेऊँराम, सारा जग तारिया और बहिनों ने भजन गाया- गुरू आये मम धाम हमरे भाग जगे. इसके बाद बहिन-भाइयों ने स्वामी टेऊँराम जी की आरती की.और स्वामी जी ने पल्लव पाकर भक्तजनों को आशीर्वाद दिया.

अगले दिन सुबह १४ दिसम्बर को प्रातः१०बजे हवन व ध्वजारोहण के समय प्रेमियों ने नाचना गाना शुरु कर दिया और भजन गाया झण्डा प्रेम का लहराया, स्वामी सर्वानन्द ने. सायं ४ से ७ बजे तक सत्संग हुआ. स्वामी जयदेव जी ने सत्संग में प्रेमियों को हंसाते हुए निहाल किया.इसके बाद परमपूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अपनी अमृतवर्खा करते हुए सगंत को निहाल किया.१५ दिसम्बर सोमवार को सुबह ११ बजे से लेकर १ बजे तक सत्संग हुआ. जिसमें स्वामी जयदेवजी महाराज ने अपने मुखारविंद से जो प्रवचन कहे सगंत को बड़ा आनन्द आया. इसके बाद परमपूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराजने अपनी अमृतवाणी से मानुषजीवन विषय के ऊपर प्रकाश डालते हुए सत्संग किया. दोपहर १ बजे के बाद विशाल भण्डारा हुआ. सांय ४ बजे हिसार के प्रेमियों ने सत्संग प्रारम्भ किया तत्पश्चात सन्तो के प्रवचन हुए.परमपूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अपनी कृपादृष्टि से सब प्रेमियों को निहाल किया.१६ दिसम्बर को स्वामी जी ने प्रातः६ बजे पल्लव पाकर सबको आशीर्वाद देते हुए हरिद्वार की पावन भूमि की ओर प्रस्थान किया.

(प्रेम प्रकाश महिला मण्डल, हिसार)

हरिद्वार (16 से 20 दिसम्बर 2003)

परम पूजनीय सद्‌गुरू महाराजजी का१६ से २० दिसम्बर तक प्रेम प्रकाश आश्रम भोपतवाला हरिद्वार में प्रवास रहा.

अहमदाबाद (22 से 26 दिसम्बर 2003)

परम पूज्य सतगुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज दिनांक २२दिसम्बर प्रातः १० बजे अहमदाबाद पहुंचे, जहां स्टेशन पर आश्रम एक्सप्रेस गाड़ी आने की सैकड़ों प्रेमी राह देख रहे थे पहुंचने पर फूलमालाओं से हार्दिक स्वागत किया गया तत्पश्चात् श्री जवाहरलालजी के निवास पर प्रवास हुआ. प्रथम दिवस पर प्रेम प्रकाश आश्रम अम्बावाड़ी सरदारनगर में सत्संग का कार्यक्रम रहा, शाम ५ से ७ बजे सत्संग समय पर पूरा आश्रम संगत से भरा था. द्वितीय दिवस २३ दिसम्बर को प्रातःकाल बहिन पुष्पादेवी के यहां स्वामी टेऊँराम आश्रम बसन्त कुटीर में सत्संग की अमृत वर्खा हुई. शेष तीन दिवस श्रीजवाहरलाल जी के निवास के पास विशाल पंडाल में प्रातःसायं सत्संग का कार्यक्रम रहा. २५दिसम्बर दोपहर १० बजे मां दुर्गा का विशाल चंडी यज्ञ हुआ जिसमें अहमदाबाद बड़ौदा जेतपुर से सन्त व प्रेमीगण पधारे, यह यज्ञ भी सुन्दर देखने लायक था इस पंचदिवसीय सत्संग कार्यक्रम में अजमेर से श्री स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज ने भी पधारकर सत्संग की अमृत वर्खा की.

स्वामी ब्रह्मानन्दजी महाराज ने सत्संग में ब्रह्मज्ञानी की महिमा वर्णन करते हुए बताया कि मुक्ति की कामना किये बिना ज्ञानी को भी फिर संसार मे आना पड़ता है. साधना से लक्ष्य की प्राप्ति की जाती है अन्तिम समय में इच्छा जागृत से गुरु रामानंदजी को भी थोड़ी अवधि के लिए कीड़े का जन्म लेना पड़ा जिसकी जानकारी कबीर ने पाई व कल्याण किया. दूसरे दिवस पर भजन गाते हुए बताया कि-

उथु जागु मुसाफिर जल्दी ईहो वक्तु अथई .

(१) हथि आयो चड़ो थी वेलो, छदे आलसु जागु सवेलो, करि आत्म राम सां मेलो.

(२) हित तुहिंजो कुझु भी नाहें , हीउ देशु परायो आहे, वठु पहिंजो बखतु बणाए.

(३) करि बसन्त तू होशियारी, वरी मिलन्दइ न अहिड़ी वारी, माणि भागु सचो सुखकारी

आदि में सृष्टि रचना हुई ब्रह्मा की वाणी में वेद रचना हुई. जिन वेदों में ज्ञान कितना फिर जीव में अज्ञान व माया का संग. वेद भगवान कहते हैं उठो जागो परमात्मा के चरणों से पहले संत शरण में जाओ सन्त शरण में पहुंच कर ज्ञान प्राप्ति करना मुश्किल है क्षण-क्षण में माया का आवेश मान बड़ाई ईर्ष्या छोड़ना कठिन है राजा भतृहरी को पिंगला द्वारा, तुलसीदास को रत्नावली द्वारा व सूरदास को वेश्या द्वारा ज्ञान मिला.

सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अपने अमृत वचनों की वर्खा करते हुए कहा-

रे मन तज निज बहिरगति अर्न्तवर सुख हेत.

अर्न्तमुख बिन सुख नहीं विदित सनातन नेत.

विषयुनि रूपी विष मेटण खातिर.

नालो तुंहिजो अमृत आ नामु जपे जिन अमृत पीतो तिनितां मां बलहारू वञां

सतगुरू तुहिंजे नाले तां मां वारि वारि बलहारू वञां.

महापुरूष अपने मन को समझाते हैं बाहर से ज्यादा सुख अन्तर में हैं. मन बुद्धि चित्त अहंकार (अन्तःकरण) ये परमात्मा द्वारा प्राप्त हैं, आंख कान आदि इन्द्रियों द्वारा मन बाहर भागता है इनसे अलग होकर जो अन्तर की ओर दृष्टि डालता है उसे उस आनंद की प्राप्ति होती है परमात्मा की आवाज को जिसने सुना उसने अनुभव प्राप्त किया अभ्यास से जड़मति सुजान होते हैं. अभ्यास वैराग्य से नाम का आनंद मिलता है, नाम की डोरी से मन को वहां पहुंचाना है, हर्ष शोक सुख दुख जन्म-मृत्यु नहीं है जन्म-मृत्यु से आजाद होना होगा ज्ञान द्वारा श्रवण से.

सिज चण्ड जो जित चमको नाहे, तारनि जी ना बात.

आदेसिनि जा उते आखारा, जाते दीहुं ना रात.

वारि-वारि बलिहार जोगिनि तां तिनि संतनि तां.

महापुरूषों की मंजिल को पाया शरणागत गुरूदेव की ओर से नाम-द्वारा मंजिल को पाया.अपने मन को समझावें संसार की कौनसी वस्तु साथ-साथ जायेगी. अपना उद्धार अपने हाथ में है. पुरूषार्थ से लक्ष्य की ओर बढ़ेगें संसार से क्या हासिल करना है. रहना,काम करना भी संसार के अन्तर्गत पड़ेगा.

जहिड़ो आहियां तहिड़ो तुहिंजो तो बिन सतगुरू बियो ना मुंहिजो.

बाझ करे बाझारा पहिंजी, मुंहिजो सागुं कजांइ तू संहिजो.

नाथ नजर सां निहारिजांइ, सतगुरू मूंखे मन मां कीन विसारिजांइ.

दर्शने देई दिलि ठारिजाइं-दिलि ठारिजाइं.

सर्व धर्मान् परित्जय मामेवं शरणं.

आशा पूरी न हो तो मन की श्रद्धा डगमग होवे ऐसा नहीं, पिता परमात्मा सोचे समझे देते हैं परीक्षा के समय मन डगमग नहीं,प्रतिकूल परिस्थितियों में भी भक्तिनाम स्मरण से विमुख न हों, चात्रक का प्रेम बादल से परन्तु वर्षा बरसने पर दूसरी ओर नहीं देखता अन्त तक प्रीत निभाता है

मन हमारा चंचल है जबतक विश्वास की प्रेम न जगी है तबतक भटकता है निश्चल मन से मिलत है निश्चल आत्म राम टेऊँ मन निश्चल करे पाओ सुख का धाम फल की ओर न देखकर कर्तव्य करें सच की नैया डूबती नहीं यदि विश्वास श्रद्धा प्रेम सच्चा है तो बेड़ा पार होगा. देखते देखते अभ्यास होगा मन विचलित नहीं होगा. राम को जीवन में सुख या दुख आये परन्तु १४ साल वनवास मिला राजाओं का वेष नहीं नंगे पैर जंगल में जाना है. मन निश्चलता आसरा गुरूदेव का. सद्बुद्धि सुमति का दान मांगे प्रार्थना करें.

सन्त दामाराम पीर गोठ वाले का नवीन आश्रम देखा. संत प्रभाराम की भगवान कृष्ण की मूर्ति स्थापना हुई भजन गाया व प्रसाद पाया नवीन आश्रम बड़ा सुन्दर था.

जयपुर (27–28 दिसम्बर 2003)

परम पावनधाम श्री अमरापुर स्थान में २१ दिसम्बर को सद्गुरु टेऊँराम गौशाला का उद्घाटन करने के उपरान्त अहमदाबाद यात्रा के पश्चात् पुनः २७ -२८ दिसम्बर जयपुर में प्रेमियों को सत्संगानन्द का अमृत पिलाते हुए मुम्बई की ओर प्रस्थान हुआ सदगुरु महाराज व सन्त मण्डली का.

मुम्बई (29 दिसम्बर से 5 जनवरी 2004 तक)

विशाल संत समागम

सन् २००३ साल की विदाई व २००४ साल का शुभ आगमन

जीवन के क्षण सन्तों के संग, सत्संग की प्राप्ति खार मुम्बई में

खार १६वें रोड पर स्थित प्रेमप्रकाश आश्रम में वार्षिक महोत्सव में ३१ दिसम्बर की रात्रि का वर्णन. रात्रिकाल ११ बजे भोजन उपरान्त जो प्रेमियों व सन्त सद्गुरू महाराज की सभा जुड़ी,भजनानंद में सन्त श्रीमुक्त, सन्त हरीओम लाल व श्री गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ सन्त श्री मनोहरलालजी व सन्त श्री नामदेवजी महाराज ने उपस्थिति होकर सभा की शोभा बड़ाई. प्रार्थना भजन गाते हुए सभी प्रेमियों के लिये आचार्य गुरूदेव सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज जी से आशीष मांगी कि आपके नाम में चित जुड़ा रहे, सुमति सद्बुद्धि मांगते हुए भजन गाया-

गुरूदेव मिट्ठा मनठार मुंहिजा सतगुरू टेऊँराम

ईहा दया कयो मूंते नितु जपियां तव्हांजो नाम

३१ दिसम्बर दोपहर ३ बजे पूजा आराधना कर देव पूजन दिगपाल पूजन नवग्रह की अर्चना की गई जो कि पांच बजे तक कार्यक्रम रहा. नववर्ष का प्रारम्भ सत्संग प्रार्थना उपरान्त श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ पाठ आरम्भ भगवान व गुरूदेव आरती पूजन उपरान्तह वन करके किया गया.

जिसमेंमुम्बई,कल्याण,दिल्ली,जयपुर,ग्वालियर,आगरा,कानपुर,लखनऊ, जलगांव,बनारस आदि महानगरों से आये हुए सन्तों व प्रेमियों ने भाग लिया तत्पश्चात् श्री सद्गरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा पूजा स्नान वेदोक्त मंत्रों के उच्च स्वर से पंडित श्री त्रिपाठी द्वारा कराया गया. सभी प्रेमी इस अवसर पर गुरूदेव जी के दर्शनकर प्रसन्न हुए तत्पश्चात् आश्रम के ऊपरी तल पर ध्वजावन्दन व पूजन किया गया. आरती उपरान्त भजनगायन के अवसर पर सारी संगत प्रेम उमंग से नाची, जिसका नजारा आकाश मार्ग से देवताओं ने भी अवलोकन किया यह शोभा भी देखने लायक थी.

एक जनवरी 2004 सायंकालीन सत्संग सभा में भक्त नरसिंह ने भजन गाया-रे मन अब उठ जाग रे तुझे हरि मिलेंगे, संत श्रीमुक्त ने हरि में तेरा हूं तेरा, श्री शंकरलालजी ने अजमेर से आकर गुरू महाराज की महिमा भजनों को गाकर भाव-विभोर किया-तारनि में चोदींह जो चंडु आ, मुहिंजो स्वामी सर्वानंद आ, संत जयदेव जी ने अमरापुर वाणी का भजन गाते हुए बताया-गुरू ज्ञान दे हरि ध्यान दे, जहिसां सफलो जन्मु करियां, शबरी केवट का उदाहरण देते हुए बताया कि निर्मल मन से परमात्मा को पाया जा सकता है कोन्हे मुहिंजो हालु स्वामी भगवद् पहिंजो भालु भलायो, लोकनि लेखे लायकु आहियां,लिकी छिपी थो पाप कमायां, बेहदि मां बदचाल स्वामी शर्म छदे मूं चडो चवायो, जिस ठाकुर से नाहीं चारा तांको कीजे सद् नमस्कारा, नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ सद्गुरू महाराज, संतमंडली व प्रेमियों का स्वागत करते हुए डॉ. अशोक चैनानी (अमेरिका) ने प्रसन्नता व्यक्त की.

मुम्बई (माहीम) प्रेम प्रकाश आश्रम का नवीनीकरण

दादा होतचन्दजी,श्री चन्द्रलाल के अथक प्रयासों से इस नवीनीकृत प्रेम प्रकाश आश्रम में २ जनवरी शुक्रवार को प्रातःकाल सत्संग दर्शन का कार्यक्रम संपन्न हुआ. आश्रम बड़ा ही रमणीक है जहां आचार्य व गुरूवर के स्वरूपों के साथ भगवान भोलेनाथ मां दुर्गा श्री राम दरबार व झूलेलाल के स्वरूप भी प्रतिष्ठित हैं. इस शुभ अवसर पर गुरूवर स्वामीशांतिप्रकाशजी महाराज व सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज के साथ श्री झूलेलाल भगवान के स्वरूपों को ३ जनवरी को शनिवार एकादशी सत्संग के साथ, हवन करके स्थापित किया गया. विशाल आयोजन के साथ आम भंडारा भी किया गया जिसमें सन्तों प्रेमियों के साथ भाग्यानगर के कई भक्तों ने प्रसाद पाया यह कार्यक्रम बड़ा ही सुन्दर,दर्शनीय था. प्रेम प्रकाश आश्रम खार मुम्बई के वार्षिक उत्सव के अवसर पर सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के अमृत वचन-

मन के हारे हारिये मन के जीते जीत, मन ही से प्रभू पाइये मन ही से प्रतीत.
तन मन जो जोड़ु लाए, दुश्मन सभई दबाए पहिंजो न मनु मनाए
बलवानु थियो त छा थियो, हिकु ईशु न ध्यायो, इन्सानु थियो त छा थियो.
आराम मन न आयो, धनवान थियो त छा थियो.

शासक नाम शासन करने वाले का, मन के ऊपर राज करने वाले का राजा जो राज्य पर शासन करे जिसने मन को न जीता, सद्मार्ग पर न लगाया, मिले हुए मार्ग का सदुपयोग करना जिज्ञासु का गुरू से मिलना जिज्ञासु को ज्ञान प्राप्त होना.

मिलो मिलावो मिल रहो मिलो तो मेला होय, अन्तरआतम जो मिले मेला कहिये सोय

स्मरण वाली वृत्ति का जन्म होना नहीं है. सत्संग सुनते शुभ वृत्ति का जन्म होता है-

जीवन का कल्याण करूं नाम स्मरण करूं
चली पूतरी लोन की लेन थाह को थाह
अनाथ आप आपे बई पलट कहेको बैन
मन चेतन जी लगी आ लड़ाई कोरटि कनि था रोजु अदा.

आत्मा का आवाज सुनना मन को सद्मार्ग पर लगाना.स्थूल त्याग नहीं मोह ममता का त्याग करना.

परे कुटुम्ब तोखां भजी पयो भर्मे, अजां तो न दिलि आ छदी आ गली,
वञई थी वञई थी हली हयाती हथनि मां वञई थी हली.

प्रेम देखा मन परिवार संसार से हटता नहीं, इसे ही माया कहा गया है. सत्पुरूषों का सन्देश वाणी अमृत के तुल्य है वो अनुभव अन्तःकरण का है चिट्ठी लिख रखी है.

मोतिनि जहिड़ा अखर पन्ने ते, सतगुर लिखिया हथरनि सां.
जो कुछ लिखयो मुहिंजे लइ सो, ईश्वर जो ऐलान थियो.
हर पन्नो खणी हथनि में चुमी रखा मां विशमनि में.
उमरि सजीअ मे अजु ही समुझो ईश्वर जो अहसानु थियो.
प्रियनि जो पैगामु पढ़ी मनु मुहब्बत में मस्तान थियो.

मन को अपने पीछे लगाना.प्रार्थना करें अंधकार को दूर करने के लिए दिया सलाई की आवश्यकता होती है.

ज्ञान जो दीअरो बारि प्यारा गुरमुख पहिंजे मन मंदिर में.
शरणागत् शरणागत् गुरूदेव करूणासिंध तुम चरणाबिंद की धूल हम.

5 जनवरी आज खार मेले का समापन दिवस है. प्रातःकाल संत प्रतापराय,संत हरिओमलाल व सद्गुरू महाराजजी ने अमृतरस पान करा कर सारी संगत को मंत्र-मुग्ध कर दिया. मुम्बई जैसे महानगर में भक्ति की ऐसी रसधारा देखकर आश्चर्य होता है. वास्तव में ऐसे सुख-वैभव के बाद में भक्ति का एक अलग ही आंनद है बहुत सारे विदेशी प्रेमप्रकाशीयों सहित प्रेमी अश्रुपूर्ण लोचनों से यह भाव प्रकट करते हुए दिखाई दे रहे थे कि ऐसा अवर्णनीय अकथनीय क्षण हमें ना जाने कब प्राप्त होगें.कुछ भी हो सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज की भक्ति और शक्ति प्रत्यक्षरूप में दृष्टिगोचर होती है.

सायंकालीन सत्संग सभा में अथाह आंनद का सागर उमड़ा. सर्वप्रथम श्रीअमरापुर के विद्यार्थीयों ने भजन प्रस्तुति दी.
संत भोलानाथ ने ओ टेऊँराम बाबा जल्दी से तुम तो आना संत संजयकुमार ने स्वामी टेऊँराम की अमर कहानी संत शंभूलाल ने आशिक अहिड़ो न थीदों स्वामी टेऊँराम जहिड़ो संत सुंदरदास जी ने सद्गुरू मूंखे मन मां कीन विसारजाइं भजन के बाद स्पेन से आए श्री रामबूलानी (सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी के स्वरूप में),विमला बूलानी (माता कृष्णा के स्वरूप में) ने भजन- अम्मा मूंखे मोकल दे, घरू कीन वणे तुहिंजो मां वेन्दुसि जोगिन दे तत्पश्चात् संत मनोहरलालजी ने मूंखे तार अची कर पार अची मुहिंजा सद्गुरू सच्चा टेऊँराम उसके बाद सद्गुरू महाराजजी ने आनंदामृत की ऐसी वर्खा की कि सभी प्रेमी सुधबुध भूलकर हरि प्रेम में नाचने गाने लगे.प्रेमीयों का ऐसा तो सैलाब उमड़ा जितने प्रेमी सत्संग सभागार में अंदर थे उतने ही प्रेमी सभागार के बाहर बड़े पर्दे पर सत्संग कार्यक्रम देख सुन रहे थे. अंत में सद्गुरू महाराज जी ने पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया.

खार वार्षिक महोत्सव में सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में सन्तश्री मनोहरलालजी,सन्तजयदेवजी,सन्त हरीओमलालजी,सन्तदयाप्रकाशजी,सन्तप्रतापरायजी,संत शंभूलालजी,संतभोलानाथजी,भक्तमूलचन्दजी,खेमचन्दजी,सन्त नामदेवजी,सन्तलक्ष्मणदासजी,सन्तशंकरलालजी,सन्त संजयकुमारजी,सन्त घनश्यामदासजी सहित देश के विविध भागों से आये विद्वान, गुणीजनों एवं देश-विदेश के प्रेमियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया.

समाचार-सार तोरवे स्वामी टेऊँराम चवां या शंकर जो अवतार

जयपुर में मंशापूर्ण महादेव मदिंर का स्थापना दिवस मनाया गया.

जयपुर के राजापार्क सिन्धी कालोनी में स्थित मंशापूर्ण मंदिर का स्थापना दिवस पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संतमण्डल व अपार जनसमुदाय के साथ २८ दिसंबर रविवार के बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया.

मदिंर स्थापना उत्सवके अन्तर्गत सद्गुरू टेऊँराम मार्ग, स्वामी सर्वानन्द बाजार से विशाल शोभायात्रा निकाली गई. जिसमें बीचों-बीच एक सुन्दर पुष्पों से सुशोभित वाहन में पूज्य महाराज श्री व संत मण्डल विराजमान थे. जिसमें संत हीरानन्द जी,संत मोनूराम जी,संत नरेशलाल,भगत मूलचन्दजी आदि शोभायात्रा में शामिल थे.मुख्य मार्गों पर विशेष रंगोली स्वागत द्वार बनाकर अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया.इसीके मध्य २२ वर्षीय एक सिन्धी बालिका संगीताजी ने चौपहियां वाहन (जीप) को अपने दांतों द्वारा खींचकर करिश्मा दिखाया. पूज्य महाराज श्री ने उसे आशीर्वाद प्रदान किया.मंदिर पहुंचने पर बैण्डबाजों के साथ स्वागत ध्वजावन्दन-हवन आदि का कार्यक्रम हुआ.सत्संग कार्यक्रम के पश्चात् विशाल भण्डारे के आयोजन में हजारों भक्तों ने पावन प्रसाद ग्रहण किया.

मीनू प्रेम प्रकाशी

(सदगुरू टेऊराम बालिका भजन मण्डली जयपुर)

सिन्धी सामूहिक विवाह समारोह में 25 विवाह

अजमेर- प्रेम प्रकाश आश्रम,आदर्शनगर अजमेर द्वारा १७वें सिन्धी सामूहिक विवाह समारोह में राज.,गुजरात,मध्यप्रदेश के अनेक नगरोंसे वर-वधु व उनके परिवारजन सम्मिलित हुए.७ दिसबर २००३ को सद्गुरु महाराज जी की असीम कृपा से सम्पन्न सामूहिक विवाह मेले में २५ जोड़ों का गठबन्धन पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया.वेदमन्त्रों के उच्चस्वरों के मध्य समस्त व्यवस्थाओं का संचालन आश्रम ट्रस्ट द्वारा प्रेमियों के सहयोग से कुशलतापूर्वक सम्पन्न किया गया.प्रत्येक जोड़े को ४० हजार रुपये का घरेलू सामान जेवर आदि भी उपहार स्वरूप दिये गये. ठाकुरदास पंजाबी,भगवानदास मामाणी,दीपा बाशी,टीकमदास पंजाबी,नारायणदास रतनानी (ट्रस्टीयों) के अतिरिक्त भगत शंकरलालनारवानी,गोरधन मोतियानी,देवनानी,नेभवानी,साधवानी सहित सभी आयुवर्गों के प्रेमियों ने सेवा कार्यों में भाग लेकर सुयश प्राप्त किया.विवाह समारोह में वर-वधू पक्ष के २५०० मेहमानों सहित बड़ी संख्या में सम्मिलित प्रेमियों के भोजन व ठहरने की व्यवस्था भी सराहनीय रही.

259 नेत्र रोगियों के निःशुल्क आपरेशन

अजमेर- श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर ट्रस्ट द्वारा स्वामी माधवदास नेत्र ज्योति केन्द्र में इस वर्ष भी ६ दिसम्बर से १२ दिसम्बर २००३ तक एक विशाल निःशुल्क लैन्स प्रत्यारोपण नेत्र शिविर लगाया गया.६ दिसम्बरको परम पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के कर-कमलों से उद्घाटित नेत्र ज्योति महायज्ञ का समापन १२ दिसम्बर को सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज द्वारा किया गया.ट्रस्टीयों के नेतृत्व में आश्रम के अनेक प्रेमियों व विद्यार्थियों ने सेवा कार्यों को सुचारू रुप से सम्पन्न किया. २५९ नेत्र रोगियों को अजमेर शहर के सुप्रसिद्ध नेत्र शल्य चिकित्सकों द्वारा लैन्स प्रत्यारोपित किये गये.

मोहन शिवनानी (अजमेर से)

आयोजन आमंत्रण

पावन श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

बसन्त पंचमी महोत्सव
26 जनवरी 2004 सोमवार

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 10 बजे तक

प्रार्थना–सत्संग 'पूज्य महाराज श्री' की बसन्त पंचमी महिमा प्रवचन कैसेट, सन्तों द्वारा गुरू महाराज की प्रतिमाओं को रंग–गुलाल आदि पूजा–अर्चना–आरती आदि का विशेष आयोजन.

सायं 4 से 6 बजे तक

भजन संध्या–प्रवचन,बसन्त महिमा भजन–सत्संग आरती आदि का कार्यक्रम

शिवरात्रि महोत्सव
18 फरवरी 2004 बुधवार

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 10 बजे तक

प्रार्थना–सत्संग 'पूज्य महाराज श्री' प्रवचन कैसेट, हवन,अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर पर ध्वजावंदन, पूजा–अर्चना–आरती व विशाल भंडारे का आयोजन

सायं 4 से 6 बजे तक

भजन संध्या–प्रवचन, आरती आदि का कार्यक्रम अमरापुरेश्वर महादेव मंदिर में प्रातः10 से 11बजे तक ध्वजावंदन,जलाभिषेक,आरती

गुरूवार व शनिवार

सुबहः 7:00 बजे से 8:30 बजे तक सत्संग–गुरू प्रार्थनाष्टक पाठ
सायं: 4:00 बजे से 6:00 बजे तक भजन संध्या–आरती

सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप, समाधि स्थल पर पुष्पों की झांकी का दर्शन

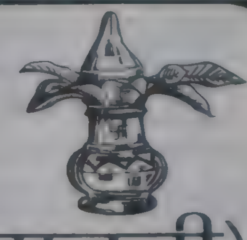
झांकी दर्शन समय सायं 5 से रात्रि 9 बजे तक

संत नामदेव की चीन यात्रा

प्रेम प्रकाश मंदिर, कावलान (हागकांग) के सन्त नामदेव जी गुरु महाराज जी की प्ररेणा व प्रेमियों आग्रह से ३० नवम्बर को हागकांग से २ घंटे की ट्रेन य द्वारा चीन की नगरी (गुअंगजांऊ) में प्यारे मधुर व श्रीमती रेखा व उनके सुपुत्र राजेश -लवीना भोजवानी तथा अन्य सदस्यों के यहां जाना उसके बाद सीमा-धीरज, मन पंजाबी, किशन-रजनी सांवलानी के यहां जाना हुआ, हांजू शहर से एक घंटे टेक्सी द्वारा (शाउशिंग) जहां दिन रात हीटर चलते हैं. काफी सर्दी पड़ रही है. वहां प्यारे अ प्रकाश मनोज रामचन्दानी के निवास पर ठहरना हुआ २ दिसम्बर को रात विश्राम के बाद ३ दिसम्बर को शाम ७-८ बजे सत्संग व भंडारा (भजन भोजन) की व्यवस्था र गई जिसमें काफी संख्या में प्रेमी आए, वहां गुरु महाराज की महिमा के अर्थ को समझाते हुए निष्काम भक्ति करते-करते महाराज श्री में अपारशक्ति आ गई इसी महाराजश्री का कोई भी वचन खाली नही गया. सभी की मनोकामनाऐं पूर्ण हुई.

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ पर्व



श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का अन्न क्षेत्र (छावनी)

15 अप्रैल (गुरूवार) से 4 मई (मंगलवार) 2004 तक

क्षिप्रा तट उज्जैन में,
कुम्भ पर्व स्नान ।
सन्त दरस सत्संग कर,
पाओ शान्ति सुजान ।।

83वां चैत्र मेला

29 अप्रैल (गुरूवार) से 3 मई (सोमवार) 2004 तक

कलियुग में प्रधान है,
सेवा पुनि सत्संग ।
कहे टेऊँ जिसके किये,
होवे भव दुख भंग ।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातनधर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रेम प्रकाश मण्डल की ओर से उज्जयिनी तीर्थ क्षेत्र में महाकुम्भ मेला 15 अप्रैल (गुरूवार) से 4 मई (मंगलवार) 2004 तक श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा । इस बीच जयपुर का चैत्र मेला भी उज्जैन में 29 अप्रैल से 3 मई 2004 तक मनाया जायेगा । आप सब इस महाकुम्भ पर्व में आकर स्नान, सत्संग, सेवा करके मानव जीवन को कृतार्थ करें ।

कार्यक्रम

मुख्य स्नान तिथि

१६.०४.२००४ सोमवार	सोमवती अमावस्या मुख्य स्नान
२२.०४.२००४ गुरूवार	अक्षय तृतीया मुख्य स्नान
२४.०४.२००४ शनिवार	वैशाख शुक्ल पंचमी मुख्य स्नान
०४.०५.२००४ मंगलवार	वैशाखी पूर्णिमा शाही स्नान

प्रतिदिन कार्यक्रम

प्रात: ७ से ११ व सायं ४ से ८ बजे तक सत्संग एवं प्रात:-सायं भण्डारा होगा

छावनी व चैत्र मेला कार्यक्रम

१५.०४.२००४ गुरूवार	प्रातः श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र आरंभ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व ध्वजावंदन
२८.०४.२००४ बुधवार	स्वामी गुरूमुखदासजी महाराज की ३६वीं पुण्यतिथि
२६.०४.२००४ गुरूवार	चैत्र मेले के निमित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ व श्रीमद्भगवद् गीता का पाठ आरंभ, हवन व सत्संग
०३.०५.२००४ सोमवार	प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग
०३.०५.२००४ सोमवार	सायंकाल पल्लव पाकर उत्सव का समापन

...त्रा में:
...। प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
...। अमरापुर स्थान, एम.आई. रोड,
...यपुर फोन: ०१४१-२३७२४२३, २४

नोट:
१. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टॉर्च एवं गिलास जरूर लावें ।
२. सोना-गहना व कीमती सामान साथ न लावें ।
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरूष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें ।

पता:
श्री प्रेम प्रकाश अन्न क्षेत्र (छावनी)
जंतर-मंतर रोड, लाल पुल के पास, उज्जैन
मो. ६४२५०-५३६८२, ९८२६०-१४८५०

दिमागी कसरत

आध्यात्मिक वर्ग पहेली क्रं.- 3

1	2	3			4	ॐ	5
6			ॐ	ॐ	7		
	ॐ	ॐ	8	ॐ		ॐ	
	ॐ	9				ॐ	
ॐ	10		ॐ	ॐ	11	12	ॐ
13	ॐ	ॐ	14	ॐ	ॐ	15	
	ॐ	16		ॐ	17		ॐ
18					ॐ	19	

बाएं से दाएं :

१. साईं टेऊँराम जी द्वारा दिया गया महामंत्र. (२.२.२)

२. मोह, माया . . . का त्याग ही सच्चा वैराग्य है. (३)

७. जिव्हा , जिसका बोला सत्य -असत्य मानव का चरित्र दर्शाता है.(३)

६. कृष्ण ने गीता में इस पर विशेष बल दिया है. (४)

१०. वह प्रान्त जहाँ संत साईं टेऊँराम जी ने जन्म लिया. (२)

११. संसार को प्रखर प्रकाश व ऊर्जा देने वाला. (२)

१५. सच्ची साधना से ही . . . का द्वार खुलता है. (२)

१६. संसार में लिप्त न होकर ईश्वर के प्रति लौ लगाने वाला सत्पुरुष. (२)

१७. सत्गुरु व सत् पुरूषों की . . . जीवन को सही दिशा देती है. (२)

१८. सत् , चित् व आनन्द का मिश्रण. (५)

१६. मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई,. . .मात बन्धु सखा सापणो न कोई.(२)

ऊपर से नीचे :

१. धर्म जाति से ऊपर उठकर सबको समान दृष्टि से देखने वाला. (४)

२. मन का प्रकाश हर . . . को हर लेता है. (२)

३. जिसका . . . . परम पिता से जुड़ गया हो उसे संसार के रिश्तों से क्या.(२)

४. शेषशायी विष्णु भगवान का शयन स्थल. (२.३)

५. सदा से स्थापित अखण्ड सत्य. (४)

८. भारत एक . . . निरपेक्ष राष्ट्र है. (२)

६. श्रवण . . . पर माता . पिता का भार लिए पुत्र धर्म के प्रतीक हैं. (२)

१२. जो भी असत्य है आडम्बरयुक्त है उससे . . . ही उत्तम है . (४)

१३. लोहा पूजा में हो या वधिक के घर, . . . अवगुण न देख उसे खरा सोना बनाता है. (३)

१४. आत्म विश्लेषण , आत्म . . . मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है. (३)

१६. . . . सत्य वचन बोलो , सच्चे मार्ग पर चलो . सदैव , हमेशा (२)

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपु

आध्यात्मिक वर्ग पहेली - 2 का सही हल

1 नि	र्मो	2 ह	3 ता	■	4 अ	प	र्णा
र्ब	■	5 ज	म	द	ग्नि	■	■
6 ल	क्ष्य	■	सि	■	■	7 शि	8 प्रा
■	■	9 सु	क	र्म	■	■	र्थ
■	10 की	■	■	■	11 अ	र्च	ना
12 का	र्ति	13 क	■	14 ध्रु	व	■	■
षा	■	15 बी	ज	■	16 ता	17 र	ण
य	■	र	■	18 धी	र	ज	■

सही हल भेजनें वालों के नाम-

सिवनी से -रेनू माखीजा,श्रीमती विमला गुरनानी,पुष्पा मोहनानी,दीपा मोहनानी,दीपा रामचन्द माखीजा,मोहित व पूजा मोहनानी,इन्द्रा बंसीलाल गुरनानी.धमतरी से -श्रीमती लक्ष्मीदेवी पंजवानी,भानुप्रतापपुर से श्रीमती मायादेवी,खैरथल से प्रेमप्रकाशी रूपा नोतानी,गांधीधाम से अंजू किशन माधवानी,मोहनदास भगतानी,ग्वालियर से पूजा वलेचा,कामठी नागपुर से रवि मुलानी.

सही हल आगामी अंक में देखें -

सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर ५ फरवरी तक कार्यालय में भिजवायें.

पता :

प्रेम प्रकाश संदेश

प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,

लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१

आयोजन मंत्रण

15 फरवरी से 19 फरवरी 2004 तक

परम श्रद्धेय संत शिरोमणि त्यागी तपस्वी संत

स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का १०३ वीं जन्मोत्सव

कार्यक्रम

15 फरवरी 2004 रविवार

प्रातः 5 बजे संकीर्तन प्रभातफेरी आश्रम से निकाली जावेगी तत्पश्चात् आरती होकर श्रीमद् भगवद्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहब का पाठ आरम्भ होगा सांय 5 बजे से 7 बजे तक सत्संग होगा.

16 –17 फरवरी 2004 सोमवार मंगलवार

प्रातःकाल 8 से 10 बजे तक व सांय 5 से 7:30बजे तक सत्संग होगा.

18 फरवरी 2004 बुधवार

प्रातःकाल 6 से 10 बजे तक हवन,ध्वजावन्दन सत्संग होगा सांय 5 से 7:30 बजे तक सत्संग होगा.

19 फरवरी 2004 गुरूवार

प्रातःकाल 8 से 10:30 बजे तक सत्संग,पाठों का भोग तत्पश्चात् आम भंडारा होगा.

सांय 5 बजे से 7:30 बजे तक सत्संग होकर सत्गुरू महाराज सन्त मण्डली सहित पल्लव पाकर उत्सव का समापन करेगें.

आयोजन स्थल : स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम, श्री महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, गाढ़दे की गोट, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) दूरभाष **0751-2426111**

तीज–त्यौहार

१८ जनवरी २००४	रविवार	षट्तिला एकादशी व्रत
२१ जनवरी २००४	बुधवार	अमावस्या
२३ जनवरी २००४	शुक्रवार	चन्द्रदर्शन
२५ जनवरी २००४	रविवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२६ जनवरी २००४	सोमवार	भारतीय गणतंत्र दिवस,श्री बसंत पंचमी
२७ जनवरी २००४	मंगलवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ
२ फरवरी २००४	सोमवार	जया एकादशी व्रत
६ फरवरी २००४	शुक्रवार	पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
९ फरवरी २००४	सोमवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
१३ फरवरी २००४	शुक्रवार	कुम्भ संक्रान्ति
१६ फरवरी २००४	सोमवार	विजया एकादशी व्रत
१८ फरवरी २००४	बुधवार	महाशिवरात्रि व्रत, स्वामी गणेशानन्द जयंती
२० फरवरी २००४	शुक्रवार	अमावस्या
२१ फरवरी २००४	शनिवार	चन्द्रदर्शन
२४ फरवरी २००४	मंगलवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
२५ फरवरी २००४	बुधवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

18 जनवरी से 19 जनवरी	2004	तक	बरगढ़	☎ 094140–41864, 098290–14850
20 जनवरी से 21 जनवरी	2004	तक	धमतरी	☎ 07722–237007, 235009
22 जनवरी	2004		भानुप्रतापपुर	☎ 07850–252274(प्रातः सत्संग)
22 जनवरी	2004		दल्लीराजहरा	☎ 07748–284076(सायं सत्संग)
23 जनवरी से 24 जनवरी	2004	तक	भिलाई, दुर्ग	☎ 0788–2325208, 2328584
25 जनवरी	2004		बेमेतरा	☎ 07824–222375
26 जनवरी	2004		राजनांदगांव	☎ 07744–227716
27 जनवरी से 29 जनवरी	2004	तक	गोदिंया	☎ 07182–234104, 226924
30 जनवरी	2004		तिरोड़ा	☎ 094140–41864, 098290–14850
31 जनवरी से 2 फरवरी	2004	तक	बालाघाट	☎ 07632–242763
3 फरवरी से 5 फरवरी	2004	तक	सिवनी	☎ 07692–224752
6 फरवरी	2004		भंडारा	☎ 07184–260177
7 फरवरी से 9 फरवरी	2004	तक	नागपुर	☎ 0712–2583458, 2595830
10 फरवरी	2004		कामठी	☎ 094140–41864, 098290–14850
11 फरवरी	2004		अमरावती	☎ 0721–2670001
12 फरवरी	2004		अकोला	☎ 094140–41864, 098290–14850
13 फरवरी	2004		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
14 फरवरी	2004		अजमेर	☎ 0145–2433643
15 फरवरी	2004		जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
16 फरवरी से 19 फरवरी	2004	तक	ग्वालियर	☎ 0751–2426111
20 फरवरी से 22 फरवरी	2004	तक	डबरा	☎ 07524–223245
23 फरवरी	2004		दतिया, झाँसी	☎ 094140–41864, 098290–14850
24 फरवरी से 26 फरवरी	2004	तक	मुरैना	☎ 07532–230280, 094251–26280
27 फरवरी से 29 फरवरी	2004	तक	आगरा	☎ 0562–2211499
1 मार्च से 2 मार्च	2004	तक	अलीगढ़	☎ 0571–2420591
3 मार्च से 10 मार्च	2004	तक	हरिद्वार	☎ 01334–260144, 260815
11 मार्च से 14 मार्च	2004	तक	दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
15 मार्च से 19 मार्च	2004	तक	गाँधीधाम	☎ 02836–231612, 220320
20 मार्च	2004		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
21 मार्च से 26 मार्च	2004	तक	जयपुर	☎ 0141–2372424, 2372423
27 मार्च से 31 मार्च	2004	तक	दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
2 अप्रैल से 4 अप्रैल	2004	तक	रतलाम	☎ 07412–240229, 243471
5 अप्रैल से 7 अप्रैल	2004	तक	उज्जैन	☎ 094140–41864, 098290–14850
8 अप्रैल से 12 अप्रैल	2004	तक	इन्दौर	☎ 0731–2468140
13 अप्रैल से 5 मई	2004	तक	उज्जैन	☎ 094140–41864, 098290–14850
6 मई	2004		यात्रा	☎ 094140–41864, 098290–14850
7 मई से 8 मई	2004	तक	फैजाबाद	☎ 05278–246159
9 मई से 11 मई	2004	तक	वाराणसी	☎ 0542–225585
12 मई से 13 मई	2004	तक	इलाहाबाद	☎ 0532–2655214
14 मई से 16 मई	2004	तक	कानपुर	☎ 0512–2215747
17 मई से 18 मई	2004	तक	लखनऊ	☎ 0522–2211901
19 मई	2004		दिल्ली	☎ 011–23969774, 23942126
20 मई से 23 मई	2004	तक	अजमेर	☎ 0145–2441850, 2440279

बोध-कथा

आचरण से शिक्षा

एक समय जापान देश का निप्पन शहर मासामू नामक राजा की राजधानी था. वह उस क्षेत्र का अत्याचारी राजा था. प्रजा उससे बहुत दुःखी थी.

एक दिन सभासदों के साथ मासामू घूमने निकला. एक पवित्र स्थान देखकर वह अपने जूते बाहर छोड़ अंदर चला गया. द्वारपालका नाम होईशिरो था. उसने सोचा- 'ऐसे बर्फीले मौसम में राजा के जूते भी भीग जायँगे. राजा जब उन्हें पहनेगा तो उसे कष्ट होगा.' होईशिरोने राजा के जूते कपडो में लपेटकर सुरक्षित स्थान पर रख दिये. उस समय हल्की-हल्की वर्षा भी हो रही थी.

राजा लौटकर आया, तो होईशिरोने जूते राजा के सामने कर दिये. सूखे जूते देखकर राजा आश्चर्यचकित हो उठा. उसने सोचा-'सबके जूते तो भीग गये, किंतु मेरे जूते सूखे ही कैसे रह गये! जरूर होईशिरो इन पर बैठा होगा. इसे सजा देनी चाहिये' यह सोचकर राजा मासामूका चेहरा क्रोध से लाल हो गया उसने उन्हीं जूतों से होईशिरोको पीटना शुरू कर दिया. उसने उसे इतना पीटा कि वह बेहोश हो गया.

दूसरे दिन जब होईशिरोको होश आया तो उसका पूरा बदन दर्द से टूट रहा था. राजा सहित सब लोग जा चुके थे. राजा जूतों को भी वहीं छोड़ गया था. इस घटना से होईशिरोका मन वितृष्णा से भर गया, उसे बार-बार राजा के व्यवहार का ध्यान आता रहता. उसने सोचा यह हमारे देश का राजा है, पालक है, किंतु है अविवेकी, इससे पग-पगपर प्रजा की और राष्ट्र की हानि ही होगी,अतः मुझे इसे सन्मार्गपर लाने के लिये कुछ उपाय करना चाहिये. फिर क्या था, होईशिरो एक बोद्धमठ में पहुँचा. वह भिक्षु बन गया.उसने बोद्धभिक्षु बनकर भगवान् बुद्ध की आराधना की. एक दिन आराधना के समय भगवान बुद्ध प्रकट हुए. उन्होंने होईशिरोको आशीर्वाद दिया. होईशिरो बहुत प्रसन्न हुआ.

उन्हीं दिनों जापान का सम्राट मिकाडो बीमार हो गया. उसका सभी छोटे बड़े. वेद्यों ने इलाज किया, मगर वह ठीक नहीं हुआ. एक गुप्तचर भिक्षु होईशिरोको पकड़कर सम्राट के सामने ले गया.

प्रधानमन्त्री फूकोने कहा-भिक्षु होईशिरोजी! हमारे सम्राट की जान खतरे में है. इन्हें आप ठीक कर दें. आपकी प्रार्थना और आशीर्वाद से ही अब महाराज के प्राण बच सकते हैं.

भिक्षु होईशिरोने प्रार्थना की. संयोग से सम्राट मिकाडोकी हालत में सुधार होने लगा.

राजा मासामू के कानों में भी भिक्षु होईशिरोकी कीर्तिका समाचार पहुँचा तो वह होईशिरोके दर्शन के लिए लालायित हो उठा. राजा मासामू भिक्षु होईशिरोसे भेंट करने के लिए चल पड़ा. होईशिरो एक आसन पर ध्यानमग्न प्रार्थना कर रहे थे. राजा ने देखा, भिक्षु होईशिरोके आसन के समीप एक जोड़ी जूते हैं. मासामूको आश्चर्य हुआ-'भिक्षु तो जूते नहीं ध ारण करते. फिर ये जूते यहाँ क्यों रखे हैं?'

राजा मासामूने भिक्षु होईशिरोको प्रणाम करके पूछा 'महाराज ! ये जूते यहाँ कैसे?'

भिक्षु होईशिरोने मुस्कराकर कहा -'राजन्! ये जूते सिद्धि का मार्ग दिखाते हैं. इन्हीं के कारण मैं सारी सिद्धियाँ प्राप्त कर सका.'

बस राजा ने तुरंत उन जूतों को श्रद्धा से स्पर्श किया. होईशिरोने राजा मासामूको उन जूतों का सारा वृत्तान्त कह सुनाया. फिर कहा-'ये जूते आपने ही मुझे भेंट किये थे.'

अब राजा मासामू भिक्षु होईशिरोके चरणों में गिरकर क्षमा-याचना करने लगा.

भिक्षु होईशिरोने कहा-'राजन्!' 'भूल किससे नहीं होती? भूल को क्षमा करना ही मनुष्य का श्रेष्ठ धर्म है जाओ और विवेक से राज्य चलाओ.' राजा मासामू प्रसन्न हो गया.

हरि का नाम तन मन सब पावन कर देता है । तुलसीदास जी ने कहा है कि हे मानव यदि तू बाहर भीतर उजाला चाहता है तो राम नाम रूपी दीपक जीभ रूपी स्थान पर रख दे । गाँधी जी भी जीवन में राम नाम को बहुत महत्व देते थे । प्रभु का नाम अति पावन है जो कोई भी उसको श्रद्धा भक्ति से हृदय में धारण करता है वह उसके फल का तुरन्त अनुभव करता है । संत तुलसीदास जी ने तो यहाँ तक कह दिया कि राम से बड़ा राम का नाम । वे कहते हैं कि दशरथ पुत्र राम ने तो एक अहिल्या को तारा परन्तु राम नाम ने लाखों करोड़ों पापियों का उद्धार किया। उड़िया बाबा जी महाराज यद्यपि ज्ञानी थे फिर भी वे नाम जप पर बहुत जोर देते थे । उनके शिष्यों से यदि माला खो जाती तो वे उनसे कहते कि गंगा में दो घड़े दूध डालकर आओ तब नई माला मिलेगी । वे माला का बहुत आदर करते थे ।

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी ने तो प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में नाम महिमा का अद्भुत वर्णन किया है । उनकी तो प्रत्येक श्वास प्रश्वास गुरू मन्त्र बोलती थी । स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं रे मूर्ख । क्या तू सुनता नहीं कि तेरे भीतर वही शाश्वत संगीत गूँज रहा है । सच्चिदानन्द ! सच्चिदानन्द! सोSहं सोSहं! अतः आओ संतो ने जिस नाम की इतनी महिमा गाई है । हम भी वह भगवन्नाम लेकर जीवन सार्थक करें ।

संकलनः दिलीप देवनानी, आगरा

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. शा. - 29/18/81-11

पौराणिक कथा

अंधा और कुबड़ा

एक गाँव में दो आदमी रहते थे। एक अंधा था और दूसरा कुबड़ा। दोनों लाचार होने के कारण कहीं आते जाते नहीं थे। बस बैठे-बैठे गप्पें मारते रहते थे।

एक दिन अंधा अपने मित्र कुबड़े से बोला ,"सुनो भैया , इस गांव में पड़े -पड़े तो हम सड़ जायेंगे। चलो, कहीं बाहर चलें । भगवान की कृपा रही तो कुछ ना कुछ हाथ अवश्य लग जायेगा।"

दोनों मित्र भाग्य आजमाने चल पड़े । अंधे ने कुबड़े को अपने कंधे पर बैठा लिया । कुबड़ा अंधे को रास्ता दिखा रहा था। कुछ दूर चलने पर कुबड़े को एक रस्सी दिखाई दी। उसने अंधे से कहा, "तुम्हारे पांव के पास एक रस्सी पड़ी है उसे उठा लो, शायद काम आ जाये।"

चलते-चलते दोनों एक जंगल में पहुंचे। रात ज्यादा हो गई इसलिए दोनों को रात बिताने की चिंता होने लगी अचानक कुबड़े को एक मकान दिखाई पड़ा । वे दोनों वहीं रात बिताने के उद्देश्य से उस मकान में पहुंच गए । लेकिन अंदर जाकर उन्होने पाया कि एक राक्षस सो रहा था। कुबड़े ने भय से मकान का दरवाजा बाहर से बंद कर दिया। कुंडी के खड़कने से राक्षस की नींद खुल गई । उसने गरज कर पूछा "कौन है?"इस पर कुबड़े ने कहा ,"चिल्लाओ मत हम तुम्हारी मौत हैं। हम तुमसे भी बड़े राक्षस हैं। हम चाहें तो तुम्हें मिनटों में मसल सकते हैं।" राक्षस घबरा गया। उसने हिम्मत करके पूछा," तुम्हारे पास कोई ऐसा सबूत है जिससे तुम यह साबित कर सको कि तुम मुझसे भी ज्यादा बड़े राक्षस हो ? " इतना कहने के साथ ही राक्षस ने अपने सिर का एक बाल तोड़ कर दरवाजे से बाहर फेंका। ये मेरा बाल है। इतना मोटा व लम्बा । तुम अपना बाल तोड़कर दिखाओ कि वह कितना लंबा व बड़ा है। कुबड़े ने वह रस्सी जो कि उन्हें रास्ते में मिली थी-अंदर फेंक दी ओर कहा ये रहा मेरा बाल । राक्षस इतना बड़ा बाल देखकर घबरा गया और वह वहां से भाग खड़ा हुआ । राक्षस के भागने के बाद कुबड़े ने कुंडी खोली और अंधे को लेकर अंदर घुसा, अंदर घुसते ही कुबड़े ने देखा कि वहां ढ़ेर सारे हीरे जवाहरात पड़े थे। उसने अंधे को धन के बारे में बताया । उन्होंने एक गठरी में ढ़ेर सारे हीरे-जवाहरात बांधे और घर की तरफ रवाना हो लिऐ ।

चलते -चलते दोनों थक गए। इसलिए एक पेड़ के नीचे बैठ गए । कुबड़े ने अंधे से कहा कि हम यहीं पर अपना धन आधा आधा बांट लेते हैं। अंधा मान गया । कुबड़े ने धन की दो ढेरियां बनाईं। उसने एक ढेरी जान बूझकर छोटी बनाई, क्योंकि अंधा देख नहीं सकता था इसलिए उसने बड़ी ढेरी स्वयं हथियाने की सोची। उसने अंधे को कहा कि तुम दोनों में से एक ढेरी चुन लो । अंधे ने बडी ढेरी को हाथ लगाया। कुबड़े को शक हो गया कि उसका साथी बेकार ही अंधे होने का नाटक करता है। कुबड़े ने वहां पड़ी कुछ बालू उठाई और अंधे की आंखों में रगड़ दी । इसका परिणाम उल्टा हो गया । दरअसल अंधे की आंखे मोतियाबिंद से खराब हो गईं थीं । बालू के रगड़ने से मोतियाबिंद की झिल्ली उसकी पुतलियों से हट गई और उसे दिखाई देने लगा। अंधा न रहने पर जब उसने धन की छोटी बड़ी ढेरियां देखी तो उसको कुबड़े की धोखाधड़ी पर काफी गुस्सा आया । उसने कुबड़े की पीठ पर जोर से लात मारी । लेकिन आश्चर्य यह हुआ कि पीठ पर लात पड़ते ही कुबड़े का कूबड़ ठीक हो गया ।

इस तरह दोनों मित्र ठीक हो गए , लेकिन कुबड़ा बहुत शर्मिन्दा था। उसने अपने मित्र के अंधेपन का धन के मोह में फायदा उठाने की कोशिश की। उसने अंधे से माफी मांगते हुए कहा कि अब वे दोनों मेहनत करके पूरी ईमानदारी से अपना जीवन बितायेंगे। (संकलित)

सूचना

समस्त सम्माननीय ... उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह जाँचकर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए

– व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
NAKA MADAR, **AJMER (RAJ)**

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर हरिओम ऑफसेट, जीवाजीगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया ।
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183